



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 62]

नई दिल्ली, सोमवार, मार्च 20, 2017/फाल्गुन 29, 1938

No. 62]

NEW DELHI, MONDAY, MARCH 20, 2017/PHALGUNA 29, 1938

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी और संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 मार्च, 2017

अंतिम जांच परिणाम

विषय: चीन जन.गण. से प्रयुक्त/ऑन रोड वाहनों और जेनरेटर सैटों में प्रयोग के लिए, एल्युमीनियम रेडिएटर्स, एल्युमीनियम रेडिएटर्स सब-असेंबलीज और एल्युमीनियम रेडिएटर कोर, जो सी.के.डी. अथवा एस.के.डी. स्थितियों में शामिल की जाती हैं, और जिनमें नए आटोमोबाइल्स में प्रयोग के प्रयोजनार्थ एल्युमीनियम रेडिएटर्स शामिल नहीं हैं, के आयातों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क जांच।

क. पृष्ठभूमि

फा. सं. 14/24/2015-डीजीएडी.— 1. मैसर्स बांको प्रोडक्ट्स (इंडिया) लिमिटेड (जिसे आगे "याचिकाकर्ता" या "आवेदक" कहा गया है) ने समय-समय पर यथा संशोधित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथा संशोधित सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की पहचान, आकलन और संग्रहण तथा क्षति का निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिन्हें आगे पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) के अनुसरण में निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें आगे प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन प्रस्तुत किया है जो चीन जन. गण. (जिसे आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) से " चीन जन.गण. से प्रयुक्त/ऑन रोड वाहनों और जेनरेटर सैटों, के प्रयोग के लिए, जिनमें नए आटोमोबाइल्स में प्रयोग के प्रयोजनार्थ एल्युमीनियम रेडिएटर्स शामिल नहीं हैं, एल्युमीनियम रेडिएटर्स, एल्युमीनियम रेडिएटर्स सब-असेंबलीज और एल्युमीनियम रेडिएटर कोर (जिन्हें आगे संबद्ध वस्तुएं भी कहा

गया है) जो सी.के.डी. अथवा एस.के.डी. स्थितियों में शामिल नहीं की जाती हैं, और जिनमें नए आटोमोबाइल्स में प्रयोग के प्रयोजनार्थ एल्युमीनियम रेडिएटर्स शामिल नहीं हैं, के आयातों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क जांच आरंभ करने के संबंध में है।

2. जबकि, आवेदक द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर चीन के मूल के और वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के कथित पाटन की विद्यमानता, डिग्री और प्रभाव को निर्धारित करने के लिए और पाटनरोधी शुल्क, जो यदि लगाया जाता तो घरेलू उद्योग को हुई कथित क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होता, की राशि की सिफारिश करने के लिए उक्त नियामवली के नियम 5 के अनुसरण में विषयगत जांच आरंभ करते हुए प्राधिकारी द्वारा अधिसूचना संख्या 14/24/2015-डीजीएडी दिनांक 01 जनवरी, 2016, को जारी की गई जो भारत के राजपत्र में प्रकाशित की गई थी।
3. जबकि, प्राधिकारी ने दिनांक 22 जनवरी, 2016 को एक शुद्धिपत्र जारी किया और अधिक अद्यतन डाटा के आधार पर अपेक्षित विश्लेषण करने के लिए स्वयं को सक्षम बनाने हेतु जांच की अवधि 01 अप्रैल, 2014 से 30 जून, 2015 (15 महीने) निर्धारित की।
4. जबकि, प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र के संबंध में दिनांक 16 मार्च, 2016 को एक स्पष्टीकरण जारी किया।

ख. प्रक्रिया

5. संबद्ध जांच के संबंध में प्राधिकारी द्वारा अनुसरित कार्यविधि का यहां नीचे विवरण दिया गया है:
 - i. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के अंतर्गत घरेलू उद्योगों की ओर से आवेदक से एक लिखित आवेदन प्राप्त किया है, जिसमें " चीन जन.गण. से प्रयुक्त/ऑन रोड वाहनों और जेनरेटर सैटों, के प्रयोग के लिए, जिनमें नए आटोमोबाइल्स में प्रयोग के प्रयोजनार्थ एल्युमीनियम रेडिएटर्स शामिल नहीं हैं, एल्युमीनियम रेडिएटर्स, एल्युमीनियम रेडिएटर्स सब-असेंबलीज और एल्युमीनियम रेडिएटर कोर (जिन्हें आगे संबद्ध वस्तुएं भी कहा गया है) जो सी.के.डी. अथवा एस.के.डी. स्थितियों में शामिल की जाती हैं, और जिनमें नए आटोमोबाइल्स में प्रयोग के प्रयोजनार्थ एल्युमीनियम रेडिएटर्स शामिल नहीं हैं, के पाटन का आरोप लगाया है।
 - ii. प्राधिकारी ने ऊपर नियम 5 के उप नियम (5) के अनुसरण में जांच संबंधी कार्रवाई आरंभ पहले पाटनरोधी आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में चीनी दूतावास को अधिसूचित किया।
 - iii. प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच आरंभ करते हुए भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित दिनांक 01 जनवरी, 2016 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की।
 - iv. प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार चीन जन. गण. और घरेलू उद्योग से ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, भारत में चीन जन. गण. के दूतावास को जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की एक प्रति भेजी और उनसे जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में उनके विचारों से परिचित कराने का अनुरोध किया।
 - v. प्राधिकारी ने चीन जन. गण. में निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों से संगत सूचना प्राप्त करने (जिनके विवरण आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) और एडी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसरण में लिखित में उनके विचार जानने का उन्हें अवसर देने के लिए उन्हें निर्यातकों की प्रश्नावली भेजी।
 1. जिंजियांग हॉजहेंड रेडिएटर कं. लि.
 2. बोटोउ सिटी संकी ऑटो पाटर्स कं. लि.

3. गंगझोऊ गोंगयांग ऑटो रेडिएटर कं. लि.
 4. गंगझोऊ ऑटो पार्ट्स
 5. जियांगसी जिंटियान ऑटो इंडस्ट्री कं. लि.
 6. केवीआर इंटरनेशनल कं. लि.
 7. निंगबो हैसूझोंग जिंग ऑरिजनल ट्रेडिंग कं. लि.
 8. निंगबो टिरी ऑटोमोबाइल्स पार्ट्स कं. लि.
 9. रुइयान जिंमिनबैंग इम्पॉ. एंड एक्सपो. ट्रेड कं. लि.
 10. वेंझोऊ गोंगशेंग ऑटो पार्ट्स कं. लि.
 11. वेंझोऊ टाल ऑटोमोबाइल्स पार्ट्स कं. लि.
 12. जियांगसू वालसेन्स थर्मालिसिस
 13. झेजियांग ऑटोमोबाइल पार्ट्स कं. लि.
 14. झेजियांग हुसैन रेडिएटर मैनुफैक्चरिंग कं. लि.
- vi. तथापि, किसी भी निर्यातक ने न तो निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए न ही कोई अन्य सामग्री प्रस्तुत की।
- vii. प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं/प्रयोक्ता संघों (जिनके नाम और पते प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए थे) को जांच शुरूआत अधिसूचना की एक प्रति अग्रेषित की और उनसे नियम 6(4) के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा निर्धारित समय-सीमा के भीतर लिखित में उनके विचारों से परिचित कराने की सलाह दी।
1. यूनिक मोटर्स (इंडिया)
 2. एपेक्स कूलिंग सिस्टम प्रा. लि.
 3. कोटा रेडिएटर्स सेल्स एंड सर्विस
 4. राजस्थान रेडिएटर हाउस
 5. कर्णवती कार प्रा. लि.
 6. आहूजा सन्स
 7. क्लासिक स्पेयर्स
 8. गुरुप्रकाश ऑटो प्रा. लि.
 9. अपोलो इंडस्ट्रीज
- viii. निम्नलिखित अन्य घरेलू उत्पादकों को भी जांच शुरूआत अधिसूचना भेजी गई थी:
1. टाटा टोयो रेडिएटर लि.
 2. टेक्सन रेडिएटर्स प्रा. लि.
 3. वरुण रेडिएटर्स
 4. अलक्राफ्ट थर्मोटेक्नोलॉजीस प्रा. लि.
 5. लॉयड इलैक्ट्रिक एंड इंजीनियरिंग लि.
 6. मोडाइन थर्मल सिस्टम्स

7. एस एम ऑटो इंजी. प्रा. लि.
8. स्टैंडर्ड रेडिएटर्स प्रा. लि.
9. जी.एस. रेडिएटर्स लि.
- ix. किसी भी अन्य घरेलू उत्पादकों ने निर्धारित प्रपत्र और तरीके में उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं। हालांकि, निम्नलिखित कंपनियों ने पाटनरोधी शुल्कों को लगाने के समर्थन में प्रस्तुतियां भेजी हैं:
 1. जी.एस. रेडिएटर्स
 2. लॉयड इलेक्ट्रिक एंड इंजीनियरिंग लि.
 3. टाटा टोयो रेडिएटर लि.
 4. वरुण रेडिएटर्स
- x. निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं ने भी उक्त मामले में अपने निवेदन/प्रतिवेदन प्रस्तुत किए हैं,
 1. पेसिफिक एक्सपोर्टर्स
 2. क्लासिक स्पेयर्स
- xi. प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए अरक्षित एक सार्वजनिक फाइल के रूप में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराए हैं।
- xii. प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत और क्षतिरहित कीमतों का पूर्वाकलन करने के लिए अनुबंध-III में दिए गए मार्ग निर्देशों के आधार पर संभव सीमा तक घरेलू उत्पादक द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी की जांच की है ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पाटन मार्जिन की तुलना में निम्न पाटनरोधी शुल्क पर्याप्त होगा।
- xiii. आवेदक द्वारा प्रस्तावित जांच की अवधि (पीओआई) 01 अप्रैल, 2014 से 31 मार्च, 2015 थी। तथापि, प्राधिकारी को अधिक अद्यतन डाटा के आधार पर आवश्यक विश्लेषण करने के लिए सक्षम बनाने हेतु, प्राधिकारी द्वारा 22 जनवरी, 2016 को जारी शुद्धिपत्र के अनुसार संशोधित जांच अवधि को 1 अप्रैल, 2014 से 30 जून, 2014 (15 महीने) निर्धारित किया गया। अंतर्निहित क्षति अवधि अप्रैल, 2011 – मार्च, 2012, अप्रैल, 2012 – मार्च, 2013, अप्रैल, 2013 – मार्च, 2014 और पीओआई है।
- xiv. आवश्यक सीमा तक आगे की जानकारी की आवेदक और अन्य हितबद्ध पक्षकारों से मांग की गई। जांच के प्रयोजनार्थ आवश्यक सीमा तक घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों की जांच आयोजित की गई।
- xv. क्षतिरहित कीमत को सामान्य रूप से स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं के निर्माण और बिक्री करने की लागत और उत्पादन की लागत के आधार पर निर्धारित की गई है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए पाटन मार्जिन की तुलना में निम्न पाटनरोधी शुल्क पर्याप्त होगा।
- xvi. जांच की प्रक्रिया के दौरान, वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से सौदा-वार डाटा की मांग की गई थी और इसे भारत में संबंधित उत्पाद के आयातों की मात्रा और मूल्य के निर्धारण और विभिन्न मानदंडों के विश्लेषण के लिए अपनाया गया

है। हालांकि, जेनसेटों के लिए रेडिएटरों के आयात संबंधी डाटा हेतु, रिलायंस ने आईबीआईएस डाटा प्रस्तुत किया है, क्योंकि डीजीसीआईएंडएस डाटा ने किसी प्रकार के आयातों को नहीं दर्शाया है।

- xvii. प्राधिकारी ने नियम 6(6) के अनुसरण में, हितबद्ध पक्षकारों को मौखिक रूप से संगत जानकारी प्रस्तुत करने का अवसर उपलब्ध कराने के लिए दिनांक 24 अगस्त, 2016 को एक मौखिक सुनवाई आयोजित की, जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों, मैसर्स स्टैंडर्ड रेडिएटर्स, भारत में एक अन्य विनिर्माता और मैसर्स क्लासिक स्पेयर्स, भारत में उत्पाद के एक प्रयोक्ता ने भाग लिया। प्राधिकारी द्वारा दिनांक 7 नवंबर, 2016 को एक दूसरी सुनवाई आयोजित की गई। यह दूसरी मौखिक सुनवाई पहली मौखिक सुनवाई के बाद निर्दिष्ट प्राधिकारी के बदलने के कारण अनिवार्य थी। यह घटनाक्रम इसे जरूरी बनाता है क्योंकि दिनांक 07.01.2011 को 2006 की सिविल अपील संख्या 949 में डिलीवर किए गए ऑटोमोटिव टायर मैनुफैक्चर्स एसोसिएशन (एटीएमए) बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार नए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा एक नई सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की जाएगी। जिन हितबद्ध पक्षकारों ने मौखिक सुनवाई के समय अपने विचार मौखिक रूप से प्रकट किए थे, उन्हें अपने विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने की सलाह दी गई। हितबद्ध पक्षकारों को पुनरुत्तर अनुदेश प्रस्तुत करने का भी अवसर दिया गया। उनमें दी गई प्रस्तुतियों पर भली-भांति विचार किया गया है और उचित रूप से उन पर कार्रवाई भी की गई है। इसके अतिरिक्त, याचिकाकर्ता कंपनी के विभिन्न वित्तीय डाटा की जांच के लिए दिनांक 20 दिसंबर, 2016 को एक और सुनवाई आयोजित की गई थी।
- xviii. उन निर्यातकों, उत्पादकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों, जिन्होंने न तो प्राधिकारी को प्रत्युत्तर दिया और न ही इस जांच के संगत जानकारी की आपूर्ति की है, को असहयोगी हितबद्ध पक्षकार माना गया है।
- xix. इस प्रकटीकरण विवरण में *** गोपनीय आधार पर किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी का प्रतिनिधित्व करता है और नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा इसी प्रकार उस पर विचार किया जाता है।
- xx. विषयगत जांच के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई विनिमय दर 1 अमेरिकी डॉलर = 62.13 रुपए है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

6. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद " चीन जन.गण. से प्रयुक्त/ऑन रोड वाहनों और जेनरेटर सैटों, के प्रयोग के लिए, जिनमें नए आटोमोबाइल्स में प्रयोग के प्रयोजनार्थ एल्युमीनियम रेडिएटर्स शामिल नहीं हैं, एल्युमीनियम रेडिएटर्स, एल्युमीनियम रेडिएटर्स सब-असेंबलीज और एल्युमीनियम रेडिएटर कोर (जिन्हें आगे संबद्ध वस्तुएं भी कहा गया है) जो सी.के.डी. अथवा एस.के.डी. स्थितियों में शामिल नहीं की जाती हैं, और जिनमें नए आटोमोबाइल्स में प्रयोग के प्रयोजनार्थ एल्युमीनियम रेडिएटर्स शामिल नहीं हैं", है।

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

7. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:

- क. विचाराधीन उत्पाद के दायरे में उपयोग के लिए तैयार रेडिएटर्स, सीकेडी या एसकेडी स्थितियों में रेडिएटर्स और एल्युमीनियम रेडिएटर कोर शामिल किए जाने चाहिए। यदि शुल्क केवल तैयार वस्तुओं पर लगाया जाता है तो वस्तुओं को अंशघटित रूप में आयातित किया जा सकता है और यह शुल्क लगाने के सम्पूर्ण प्रयोजन को विफल कर देगा।

- ख. विचाराधीन उत्पाद में बड़ी संख्या में पुर्जों/संघटकों को असेंबल करना शामिल है, जिनमें से कुछ को देश में उत्पादित किया गया है और जबकि कुछ को खरीदा गया है। उत्पादन प्रक्रिया में एल्युमीनियम रेडिएटर कोर जैसे महत्वपूर्ण पुर्जों का उत्पादन और तत्पश्चात् उन्हें असेंबल करना शामिल है। असेंबली प्रचालन सिर्फ एक स्कू ड्राइवर प्रौद्योगिकी है।
- ग. विचाराधीन उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्कों को लागू किया जाना अपेक्षित है चाहे वह असेंबलड रूप में हो या सीकेडी और एसकेडी स्थितियों में।
- घ. यदि विचाराधीन उत्पाद पर असेंबलड या सीकेडी और एसकेडी स्थितियों में एडीडी लागू किया जाता है तो यह शुल्क के समाप्त होने की भावी समस्या का भी समाधान करेगा। विगत में, प्राधिकारी ने सीएफएल और एसडीएच में इसी प्रकार उत्पाद को निर्धारित किया है।
- ङ. पहले कभी ऐसा मामला नहीं हुआ है जहां विचाराधीन उत्पाद में केवल उन्हीं वस्तुओं को शामिल किया गया है जिनका जांच की अवधि के दौरान आयात किया गया था। प्राधिकारी ने कभी भी विचाराधीन उत्पाद की निःशुल्क सूची की जांच नहीं की है।
- च. विचाराधीन उत्पाद में सब-असेंबलीज को शामिल किया जाना चाहिए। यदि शुल्क केवल रेडिएटर कोर पर लगाया गया है तो निर्यातक सब-असेंबलीज को निर्यात करना आरंभ कर देंगे और संपूर्ण प्रक्रिया को निरर्थक बना देंगे।
- छ. ऑटोमोटिव रेडिएटर्स और जेनसेट रेडिएटर्स के लिए एचएस कोड समान है। चाहे यह अलग होता तो भी इसे विचाराधीन उत्पाद में शामिल किया जा सकता था। प्राधिकारी ने विगत मामलों में ऐसा किया है जैसे वीएफवाई।
- ज. याचिकाकर्ता कीमतों के प्रतिकूल प्रभाव को झेल रहा है। जब तक याचिकाकर्ता को प्रतिकूल कीमत या मात्रा प्रभाव को सहना पड़ता है, प्राधिकारी यह निष्कर्ष देंगे कि घरेलू उद्योग ऐसी क्षति को सह रहा है।
- झ. डीजीएडी ने आवेदन के आधार पर विचाराधीन उत्पाद के दायरे को प्रतिबंधित किया है और वर्तमान मामले में भी दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है।
- ञ. चीन से ऑटोमोटिव रिप्लेसमेंट ग्लास विंडशील्ड जांच संख्या 731-टीए-922 (अंतिम) प्रकाशन 3494, मार्च, 2002 के मामले में अमेरिकी आईटीसी ने निम्नानुसार निर्णय दिया है:

हमें एआरजी विंडशील्ड सहित घरेलू जैसे उत्पादक के समान उत्पादों का पता लगा है। एआरजी और ओईएम विंडशील्ड की समान भौतिक विशेषताएं और अंतिम प्रयोग है, उनके बीच अंतर, सिद्धांततः वाहन विनिर्माता की मालिकाना विशिष्टताओं के साथ उनकी समानरूपता, विचक्षण है। फिर भी, उन भिन्नताओं का घरेलू समान उत्पाद विश्लेषण के प्रति संगत अन्य कारकों के लिए उल्लेखनीय निहितार्थ है, अतः परिवर्तनीयता सीमित है। एआरजी विंडशील्ड, जो उन मालिकाना विशेषताओं के अनुसार डिजाइन नहीं की गई है, का ऑटोमोबाइल विनिर्माण में ओईएम विंडशील्ड में बदले में प्रयोग नहीं किया जा सकता है। हालांकि, ओईएम विंडशील्ड का एआरजी विंडशील्ड के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है, यह प्रयोग मुख्य रूप से वारंटी प्रतिस्थापन के कारण सीमित प्रतीत होता है जहां ओईएम विंडशील्ड्स की जरूरत होती है। संवितरण की सारणियों में महत्वपूर्ण अंतर है जिसमें ओईएम विंडशील्ड्स मुख्य रूप से वाहन विनिर्माताओं को बेची जाती हैं और एआरजी विंडशील्ड्स मुख्य रूप से वितरकों और खुदरा ऑटो ग्लास आउटलेट्स को बेची जाती हैं। जहां कुछ खास विनिर्माण कदम एआरजी और एआरजी विंडशील्ड्स, दोनों के लिए समान हैं और कुछ समान विनिर्माण सुविधाओं में उल्लेखनीय ओवरलैप है, और यूनाइटेड स्टेट्स में कर्मचारी दोनों प्रकार के विंडशील्ड्स का उत्पादन कर रहे हैं, उत्पादन घटनाक्रम को दिए गए समय और व्यय

के संबंध में दोनों के बीच उल्लेखनीय अंतर है। इसके अतिरिक्त, जहां ओईएम विंडशील्ड पैटर्न्स परिवर्तन के प्रति सीमित लचीलेपन के साथ उच्चतर मात्रा में होने वाले उत्पादन के लिए प्रवृत्त हैं, वहीं एआरजी विंडशील्ड्स आम तौर पर अधिक लचीली उत्पादन सुविधाओं में उत्पादित की जाती हैं जो निम्न से सीमित मात्रा में उत्पादन संपादित करने में प्रयुक्त की जाती हैं और लगातार पैटर्न में परिवर्तन करती हैं। इस रिकार्ड के आधार पर, हमें एआरजी विंडशील्ड्स को शामिल करने की गुंजाइश के साथ एक समकालीन घरेलू समान उत्पाद की प्राप्ति हुई है।

- ट. वर्तमान मामले में, विचाराधीन उत्पाद बड़ी संख्या में संघटकों का असेंबली है, जैसे कि एल्युमीनियम रेडिएटर कोर, प्लास्टिक टॉप, बॉटम टैंक, रबड़ गास्केट, ड्रेन कॉक, प्रेशर कैप, फास्टर आदि। उत्पादन प्रक्रिया में एल्युमीनियम संघटकों का उत्पादन शामिल है जैसे फिन्स, ट्यूब्स, हैडर प्लेट्स और कोर चैनल। इन संघटक मदों की बड़ी संख्या घरेलू उद्योग द्वारा देश में उत्पादित की जाती हैं। एक बार उत्पादित होने पर, पुर्जों को असेंबल किया जाता है और उसके बाद ब्रेजर फरनेस के जरिए गुजारा जाता है। ब्रेजिंग फरनेस से प्राप्त उत्पादन ब्रेज्ड एल्युमीनियम रेडिएटर कोर है।
- ठ. विचाराधीन उत्पाद को ऑटोमोबाइल और औद्योगिक जेनरेटर सेटों में कूलिंग डिवाइस के रूप में प्रयोग किया जाता है। गर्म कूलेंट इंजन से प्राप्त गर्मी के सहित रेडिएटर कोर से गुजरता है और इस प्रक्रिया में एल्युमीनियम ट्यूब्स को गर्मी संचालित करता है। एल्युमीनियम ट्यूब्स बदले में गर्मी को एल्युमीनियम फिंस को संचालित करता है। एल्युमीनियम फिंस से गर्मी बाहर हवा में फैल जाती है जो रेडिएटर कोर के जरिए बाहर निकलती है। हॉट कूलेंट रेडिएटर के टॉप टैंक के जरिए गुजरती है और कूल कूलेंट रेडिएटर के बॉटम टैंक से बाहर बह जाता है। विचाराधीन उत्पाद अनिवार्यतः एक हीट एक्सचेंजर है और ऑटोमोबाइल्स और औद्योगिक जेनरेटर सेटों में प्रयोग किया जाता है। ऑटोमोबाइल्स में, विचाराधीन उत्पाद केवल कार, ट्रक और बस व ट्रैक्टरों में प्रयुक्त रेडिएटर्स को शामिल करता है। हालांकि, अन्य प्रकार के वाहनों में भी रेडिएटर्स का प्रयोग किया जाता है, लेकिन वह विचाराधीन उत्पाद के दायरे से परे है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक वाहन को विशिष्ट आयाम वाले रेडिएटर की आवश्यकता होती है और इसलिए किसी वाहन में विभिन्न रेडिएटर्स को आपस में बदलकर प्रयुक्त नहीं किया जा सकता।
- ड. रेडिएटर्स का आम तौर पर लंबा जीवन होता है और इसलिए नए ऑटोमोबाइल्स में प्रयोग के लिए रेडिएटर्स का उत्पादन आफ्टर मार्केट में प्रयोग के लिए रेडिएटर्स के उत्पादन से बहुत पृथक है। नए वाहनों में प्रयोग के लिए क्षति अवधि की तुलना में याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित लगभग 12 लाख रेडिएटर्स की तुलना में, याचिकाकर्ता ने रिप्लेसमेंट मार्केट में वाहनों के प्रयोग के लिए लगभग 7 लाख रेडिएटर्स का उत्पादन किया। ओईएम सेक्टर में, एक विशेष मॉडल का उत्पाद बड़ी मात्रा में प्रयोग किया जाता है और इसलिए नए वाहनों के लिए बने रेडिएटर्स के लिए उत्पादन श्रृंखला एकदम स्वचालित है। इसके विपरीत, आफ्टर मार्केट में, चूंकि उत्पाद ऐसे ऑटोमोबाइल्स में प्रयुक्त किया जाता है जो कई वर्ष पहले सड़क पर चलते थे, रिप्लेसमेंट मार्केट में प्रयुक्त रेडिएटर्स का आयाम ओईएम में प्रयुक्त रेडिएटर्स के आयाम से बहुत भिन्न है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक ऑटोमोबाइल्स उत्पादक ऑटोमोबाइल्स मॉडल में प्रत्येक परिवर्तन के साथ रेडिएटर्स के परिमाण में संशोधन के लिए प्रवृत्त रहता है। इस प्रकार, रेडिएटर्स विनिर्माता ऑटोमोबाइल्स विनिर्माताओं द्वारा आरंभ किए गए वाहनों के नए मॉडलों के लिए अपेक्षित रेडिएटर्स के विकास के लिए ऑटोमोबाइल विनिर्माताओं के साथ हाथ मिलाकर काम करते हैं। इसके अतिरिक्त, एक बार ऑटोमोबाइल्स विनिर्माता उत्पादन श्रृंखला में एक नया मॉडल लाते हैं तो ऐसे ऑटोमोबाइल्स विनिर्माता ऐसे रेडिएटर्स की बड़ी संख्या को खरीदने के लिए प्रवृत्त होते हैं। इसके विपरीत, रिप्लेसमेंट मार्केट में रेडिएटर्स का जीवन लंबा होता है रेडिएटर्स की जरूरत ऐसे वाहनों में उत्पन्न

होती है, जो कुछ दशक पहले सड़क पर उतारे गए थे। अतः, आफ्टर मार्केट में ऐसे रेडिएटर्स की मांग ओईएम में रेडिएटर्स की मांग की तुलना में उल्लेखनीय रूप से कम है। इसके अतिरिक्त, रिप्लेसमेंट मार्केट में, खरीददार पूरा रेडिएटर्स नहीं बदलना चाहते और वर्तमान रेडिएटर्स का एक या अधिक संघटक प्रयोग करते हैं और बाजार से केवल बचे हुए पुर्जे ही खरीदते हैं। उदाहरण के लिए, उपभोक्ता के लिए केवल एल्युमीनियम रेडिएटर कोर खरीदना और वर्तमान रेडिएटर्स के अन्य सभी अन्य संघटकों और पुर्जों का प्रयोग करना एकदम सामान्य बात है। तदनुसार, न केवल उत्पाद के परिमाण बल्कि उपभोक्ता की आशाएं और उत्पादन की मात्रा ओईएम और रिप्लेसमेंट मार्केट में उल्लेखनीय रूप से पृथक है। इस प्रकार, ओईएम और रिप्लेसमेंट मार्केट में उत्पाद की जरूरतें संबद्ध उत्पाद प्रकार, उसके आयाम, इसके एकीकरण के स्तर और अपेक्षित उत्पादन की मात्रा के संबंध में पूर्णतः पृथक है। तदनुसार, विनिर्माता पृथक बाजार खंड के लिए अलग आवश्यकताओं का प्रबंध करने के लिए भिन्न उत्पादन श्रृंखला की स्थापना का अभिप्राय रखते हैं।

- ढ. संबद्ध वस्तुओं को सीमा शुल्क उप-शीर्ष 87089100 के तहत सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 87 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। तथापि, सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और यह जांच के अंतर्गत पीयूसी के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी है।
- ण. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं भारत में आयातित किए जा रहे विचाराधीन उत्पाद के समान हैं। घरेलू उद्योग का दावा है कि आवेदक के उत्पाद और संबद्ध देश से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है और दोनों विशेषताओं की शर्तों में तुलनीय है जैसे कि भौतिक विशेषताएं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य और प्रयोग, उत्पाद विशिष्टताएं, कीमत निर्धारण, वितरण और मार्केटिंग और वस्तुओं का टैरिफ वर्गीकरण 1 आवेदक द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं और संबद्ध देश से निर्यात की जा रही वस्तुओं में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है और तकनीकी और वाणिज्यिक तौर पर दोनों प्रतिस्थानी है।
- त. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में एक स्पष्टीकरण जारी किया है। इसके अतिरिक्त, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने कीमतों की तुलना करने के लिए एक पीसीएन प्रणाली विनिर्दिष्ट की है। याचिकाकर्ता ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को संगत जानकारी उपलब्ध कराने में इसी का अनुसरण किया है।
- थ. घरेलू उद्योग ने यह कहते हुए स्टैंडर्ड रेडिएटर्स प्रा. लि. द्वारा किए गए निवेदनों का प्रतिवाद किया है कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे में कोई द्विअर्थकता नहीं है।

अन्य उत्पादकों/निर्यातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए निवेदन

8. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:

- i. पीयूसी में सब-असेंबलीज और जेनरेटर सेटों के सहित एल्युमीनियम रेडिएटर्स शामिल हैं। सब-असेंबलीज और संघटकों को मुख्य उत्पाद के साथ शामिल करना उचित नहीं है। पीयूसी का विवरण गंभीर कानूनी त्रुटियों से आक्रांत है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी जाने वाली कोई जानकारी दुर्बोध हो जाती है क्योंकि इस बारे में कोई स्पष्टता नहीं है कि कौन-सा डाटा बांटा जाना है।
- ii. स्टैंडर्ड रेडिएटर्स प्रा. लि. ने यह कहते हुए कि निवेदन प्रस्तुत किया है कि विचाराधीन उत्पाद का कार्यक्षेत्र अनिश्चित और अस्पष्ट था। यह दावा किया गया है कि प्राधिकारी को सब-असेंबलीज के अर्थ को स्पष्ट करना चाहिए जिन्हें शामिल किया जाना है और विचाराधीन उत्पाद के सुनिश्चित क्षेत्र को विनिर्दिष्ट करना चाहिए। इस बारे में कोई स्पष्टता नहीं है कि पीयूसी के संबंध में "सब-असेंबलीज, एसकेडी और सीकेडी" की परिभाषा क्या है।

- iii. जांच में नए वाहनों में प्रयोग के तात्पर्य हेतु एल्युमीनियम रेडिएटर्स शामिल नहीं हैं, मार्केट खंड के आधार पर पीयूसी को परिभाषित नहीं किया जा सकता।
- iv. "क्लासिक स्पेयर्स" रेडिएटर्स के आयातक/प्रयोक्ता, की ओर से उपस्थित श्री प्रशांत अग्रवाल ने प्रतिवेदन दिया कि याचिकाकर्ता रेडिएटर्स की पूरी रेंज नहीं बना रहे हैं और इसलिए कुछ कार विनिर्माताओं द्वारा वांछित मैकेनिकल रेडिएटर्स को जांच और परिणामस्वरूप शुल्क लगाए जाने के दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए।
- v. याचिका के समर्थक मैसर्स टेक्सन रेडिएटर्स प्रा. लि. ने इस जांच के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद में ऑयल कूलर्स को शामिल किए जाने का अनुरोध किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

9. जांच शुरुआत संबंधित अधिसूचना के अनुसार वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद निम्नानुसार है:

"नए ऑटोमोबाइल्स में प्रयोग के लिए अभिप्रेत एल्युमीनियम रेडिएटर्स के अतिरिक्त, प्रयुक्त/ऑन रोड वाहनों और जेनरेटर सेटों में प्रयोग के लिए सीकेडी या एसकेडी स्थितियों के सहित एल्युमीनियम रेडिएटर्स, एल्युमीनियम रेडिएटर सब-असेंबली और एल्युमीनियम रेडिएटर कोर" है। एल्युमीनियम रेडिएटर्स सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची-I के सीमा शुल्क उप-शीर्ष संख्या 87089100 के अंतर्गत अध्याय 87 में वर्गीकृत किया गया है। तथापि, उक्त सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक हैं और किसी भी प्रकार वर्तमान जांच के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं हैं।"

10. हितबद्ध पक्षकारों से जांच शुरुआत पञ्च प्रस्तुतियों को प्राप्त करने के पश्चात प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के दायरे को और विशेष रूप से विनिर्दिष्ट करने का निर्णय किया है। तदनुसार, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निम्नानुसार बताते हुए दिनांक 16 मार्च, 2016 को स्पष्टीकरण जारी किया:

"चीन से मूल के या वहां से निर्यातित नए ऑटोमोबाइल्स में प्रयोग के लिए अभिप्रेत एल्युमीनियम रेडिएटर्स के अतिरिक्त, प्रयुक्त/ऑन रोड वाहनों और जेनरेटर सेटों में प्रयोग के लिए सीकेडी या एसकेडी स्थितियों सहित एल्युमीनियम रेडिएटर्स, एल्युमीनियम रेडिएटर सब असेंबलीज और एल्युमीनियम कोर" के आयातों के संबंध में जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना संख्या 14/24/2015/डीजीएडी दिनांक 01 जनवरी, 2016 के संदर्भ में विचाराधीन उत्पाद के दायरे पर स्पष्टीकरण मांगते हुए हितबद्ध पक्षकारों से अनुरोध प्राप्त किए गए थे। मामले की जांच की गई है और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निम्नानुसार उक्त जांच शुरुआत अधिसूचना के क्रम में मामले को और स्पष्ट करने का निर्णय किया गया है:

- (क) इस जांच के प्रयोजनार्थ पीयूसी के क्षेत्र के भीतर प्रयुक्त/ऑन रोड ऑटोमोबाइल्स और जेनसेटों में प्रयोग के लिए निम्नलिखित आयातित मर्दे शामिल हैं:

(क) एल्युमीनियम रेडिएटर कोर्स,

(ख) एल्युमीनियम रेडिएटर्स, पूर्ण और/या पूरी तरह से नॉकडाउन या सेमी नॉकडाउन स्थिति में,

(ग) ऑयल कूलर, एयर कूलर, कंडेंसर, कम्प्रेसर, फैन मोटर आदि जैसे अन्य हिस्से पुर्जों के साथ संलग्न एल्युमीनियम रेडिएटर।

- (ख) ऊपर उल्लिखित, किसी भी संयोजन में असेंबली या सब असेंबली के साथ संलग्न एल्युमीनियम रेडिएटर्स, रेडिएटर कोर, एल्युमीनियम, जब मूल उपस्कर विनिर्माता द्वारा आयातित किए जाते हैं (जैसे कि ऑटोमोबाइल विनिर्माता और जेनसेट विनिर्माता) को इस जांच और प्रस्तावित उपायों के प्रयोजनार्थ पीयूसी के दायरे के भीतर शामिल हैं।

11. संबद्ध वस्तुओं का इंजिन कूलिंग डिवाइस, खास तौर पर ऑटोमोबाइल्स और औद्योगिक जेनरेटर सेट द्वारा प्रयुक्त, के रूप में प्रयोग किया जाता है। संबद्ध वस्तुएं सामान्य रूप से अदद या संख्याओं में बेचा जाता है। उत्पाद को सीमा शुल्क उप शीर्ष 87089100 के अंतर्गत सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 87 में वर्गीकृत किया गया है।" तथापि, यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और किसी भी प्रकार से जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है।
12. यह स्पष्ट किया गया है कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे में एकल संघटकों को शामिल नहीं किया गया है जैसे रबड़ गार्ड, फ्रेम्स, कूलर, टैंक, ट्यूब आदि। हालांकि, यदि संघटक रेडिएटर के भाग के रूप में रेडिएटर के साथ आयातित किया जाता है, तो यह प्रस्तावित पाटनरोधी शुल्क के अध्याधीन है क्योंकि यह सीकेडी/एसकेडी की परिभाषा के भीतर है। प्राधिकारी ने यह निर्णय किया है कि इस जांच के प्रयोजनार्थ, पृथक या स्वतंत्र आयातों के रूप में किसी संघटक (कों) के आयात को विचाराधीन उत्पाद के दायरे के भीतर शामिल नहीं किया गया है।
13. सब-असेंबलीज कुछ या सारे हिस्से पुर्जों और संघटकों के साथ एल्युमीनियम रेडिएटर का संयोजन है। पूर्ण रेडिएटर या सब-असेंबलीज, जब वे नाँक डाउन या अर्ध नाँक डाउन रूप में आयातित किए जाते हैं, को भी जांचाधीन पीयूसी के दायरे के भीतर शामिल किया गया है।
14. पीयूसी में कार विनिर्माताओं और जेनसेट विनिर्माताओं (ओईएम) द्वारा नए उपकरणों के संयोजन के लिए जरूरी रेडिएटरों को भी शामिल नहीं किया गया है।
15. ओईएम और ऑन रोड वाहनों द्वारा अपेक्षित रेडिएटर्स के लिए मार्केट खंड के स्पष्ट रूप से निर्धारण के संबंध में घरेलू उद्योग की प्रस्तुतियों की विस्तृत जांच की गई थी और उन्हें सत्यापित भी किया गया था। घरेलू उद्योग के संयंत्र की भौतिक जांच के दौरान, यह स्पष्ट रूप से देखा गया है कि रिप्लेसमेंट मार्केट के तात्पर्य के लिए रेडिएटरों के उत्पादन के लिए याचिकाकर्ताओं द्वारा नियोजित उत्पादन श्रृंखलाओं से, ओईएम के लिए अभिप्रेरित रेडिएटरों के उत्पादन के लिए याचिकाकर्ताओं द्वारा नियोजित विनिर्माण श्रृंखला उल्लेखनीय रूप से भिन्न हैं। इसके अतिरिक्त, उत्पादन स्वयं इसके प्रयोग के संबंध में स्पष्ट है अर्थात् नये वाहन का अनुप्रयोग या आफ्टर मार्केट अनुप्रयोग। न केवल उत्पादन के आयाम बल्कि उपभोक्ता की आशाएं और उत्पादन की मात्रा भी ओईएम और रिप्लेसमेंट मार्केट में उल्लेखनीय रूप से भिन्न हैं। रिप्लेसमेंट मार्केट की वस्तुओं का ऑटोमोबाइल्स और जेनसेट के ओईएम द्वारा प्रयोग नहीं किया जा सकता। ओईएम रेडिएटर्स आम तौर पर वाहन विनिर्माताओं को बेचे जाते हैं जबकि रिप्लेसमेंट वस्तुएं वितरकों और रिपेयर दुकानों को बेची जाती हैं।
16. अन्य देशों में जांच प्राधिकारियों ने भी विचाराधीन उत्पाद को वर्णित किया है, जिसका कार्यक्षेत्र विशिष्ट मार्केट खंड में प्रयोग के लिए प्रतिबंधित था।
17. चूंकि, विचाराधीन उत्पाद को इसके एकीकरण के विभिन्न स्तरों पर उत्पादित और बेचा नहीं जा सकता, विचाराधीन उत्पाद को वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ (क) रेडिएटर कोर, और (ख) रेडिएटर संपूर्ण में बांटा गया है।
18. इसके अतिरिक्त, यह विचार करते हुए कि विचाराधीन उत्पाद का कार, ट्रक और बस, ट्रैक्टर और जेनसेट अनुप्रयोगों में प्रयोग किया जा सकता है, प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन, कीमत कटौती और क्षति मार्जिन विश्लेषण के प्रयोजनार्थ विभिन्न पीसीएन पद्धति द्वारा पीयूसी को पहले ही स्पष्ट कर दिया है।
19. विचाराधीन उत्पाद "नए ऑटोमोबाइल उपकरण विनिर्माण अनुप्रयोगों में प्रयोग के प्रयोजनार्थ, जिनमें एल्युमीनियम रेडिएटर शामिल नहीं हैं, चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित प्रयुक्त/ऑन रोड वाहनों और जेनरेटर सैटों में प्रयोग के लिए, जिनमें नए ऑटोमोबाइल्स में प्रयोग के प्रयोजनार्थ एल्युमीनियम रेडिएटर्स शामिल नहीं हैं, एल्युमीनियम रेडिएटर्स, एल्युमीनियम रेडिएटर्स सब-असेंबलीज

और एल्युमीनियम रेडिएटर कोर, जो सी.के.डी. अथवा एस.के.डी. स्थितियों में शामिल होते हैं, पीयूसी में प्रयुक्त कारों, ट्रैक्टर, ट्रकों और जेनसेटों के लिए संबद्ध वस्तुएं सम्मिलित हैं। एकल संघटकों जैसे रबड़ गास्केट, फ्रेम्स, कूलर, टैंक, ट्यूब आदि को विचाराधीन उत्पाद के दायरे में शामिल नहीं किया गया है। इस जांच में विशेष रूप से शामिल न की गई वस्तु वाहनों के मूल संघटन में प्रयोग की जाने वाली एल्युमीनियम रेडिएटर्स हैं। ओईएम और प्रतिस्थापन (रिप्लेसमेंट) बाजार के लिए निर्मित रेडिएटर्स तकनीकी विशेषताओं और मूल्य निर्धारण में भिन्न हैं।

समान वस्तु

20. समान वस्तु के संबंध में, पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में निम्नलिखित प्रावधान है:

“समान वस्तु” से ऐसी वस्तु अभिप्रेत है जो भारत में पाटन के कारण जांच के अंतर्गत वस्तु के सभी प्रकार से समरूप या समान है अथवा ऐसी वस्तु के न होने पर अन्य वस्तु जोकि यद्यपि सभी प्रकार से समनुरूप नहीं है परंतु जांचाधीन वस्तुओं के अत्यधिक सदृश विशेषताएं रखती हैं;

21. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद कार्यकारी यह मानते हैं कि संबद्ध देश से निर्यात किए गए विचाराधीन उत्पाद और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादन किए गए उत्पाद में कोई अधिक अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किए गए विचाराधीन उत्पाद वस्तुओं की भौतिक विशेषताओं, उत्पादन प्रौद्योगिकी एवं निर्माण प्रक्रिया, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, वितरण एवं विपणन तथा शुल्क के वर्गीकरण के मामले में आयात किए गए संबद्ध उत्पाद से तुलनीय हैं। ये दो तकनीकी रूप से और वाणिज्यिक रूप से एक-दूसरे से प्रतिस्थापन योग्य हैं।

22. प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित उत्पाद तथा संबद्ध देश से भारत में आयात किए गए संबद्ध वस्तु पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर समान वस्तु है;

घ. घरेलू उद्योग का क्षेत्र एवं आधार

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

23. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध निम्नलिखित हैं:

- i. यह याचिका मैसर्स बांको प्रोडक्ट्स (इंडिया) लिमिटेड (इसके बाद इसे याचिकाकर्ता/आवेदक के रूप में उल्लेख किया जाएगा) द्वारा चीन जन. गण. से एल्युमीनियम रेडिएटर्स (संबद्ध वस्तु) के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए दायर की गई है।
- ii. याचिकाकर्ता का उत्पादन मात्र ही संबद्ध वस्तुओं के भारतीय उत्पादन का बड़ा अनुपात है। याचिकाकर्ता के पास संबंधित उत्पाद के लिए भारतीय घरेलू उद्योग की ओर से वर्तमान याचिका दायर करने के लिए पर्याप्त आधार है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता इस नियमावली के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग है।
- iii. बाजार का कुल आकार एवं देश में सड़क पर चलने वाली कारों और जेनरेटर सेट्स के लिए उपयोग किए जाने वाले रेडिएटर्स के उत्पादन का निर्धारण याचिकाकर्ता के विपणन क्षेत्र के स्टाफ द्वारा किए जाने वाले बाजार आसूचना के आधार पर किया गया है। बाजार के बाद की बिक्री तथा विपणन के लिए एक समर्पित दल है जो पूरे भारतीय बाजार को आच्छादित करने के लिए सभी क्षेत्रों में फैले हुए है। चूंकि उत्पादन और बिक्री के आंकड़े कंपनी के पास गोपनीय रूप से रखे जाते हैं और इस प्रकार के अन्य आंकड़े अन्य स्रोतों से उपलब्ध नहीं हैं, अतः याचिकाकर्ता इसे बाजार के बाद की बिक्री के लिए भारत में प्रत्येक उत्पादक के बाजार एवं हिस्से के आकार का अनुमान लगाने के लिए सर्वोत्तम रास्ता मानते हैं।
- iv. याचिका का तदनंतर टाटा टोयो रेडिएटर लिमिटेड, वरुण/काउगर रेडिएटर प्रा. लि., टेक्सन रेडिएटर प्रा. लि. और लॉयड इलैक्ट्रिक एंड इंजीनियरिंग लिमिटेड द्वारा समर्थन किया गया है। मैसर्स जीए रेडिएटर्स ने भी इस याचिका का लिखित समर्थन किया है। हालांकि उन्होंने जांच की अवधि के दौरान प्रतिस्थापन बाजार के लिए रेडिएटरों का उत्पादन नहीं किया है। तदनुसार, उनके उत्पादन पर विचार नहीं किया गया है। समर्थकों के साथ-

साथ याचिकाकर्ता, जो जांच की अवधि में विचाराधीन उत्पाद का विनिर्माता है, भारत में संबद्ध वस्तुओं का एक बहुत बड़ा उत्पादक है जिसका भारत में विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में 92 प्रतिशत हिस्सा है।

- v. याचिकाकर्ता ने संबद्ध वस्तुओं का आयात नहीं किया है। याचिकाकर्ता संबद्ध देश में विचाराधीन उत्पाद के किसी निर्यातक अथवा आयातक से (प्रत्यक्ष रूप से अथवा अप्रत्यक्ष रूप से) संबंधित नहीं है। इस प्रकार याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और 5(3) के अंतर्गत पात्र घरेलू उद्योग है।

उत्पादकों/निर्यातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

24. घरेलू उद्योग और उसके स्थान के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध नीचे दिए गए हैं:

- जैसा कि हुआ है, विचाराधीन उत्पाद को परिभाषित करना निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए "स्थान" और "घरेलू उद्योग" की अनिवार्य जांच करने के लिए असंभव हो जाता है।
- स्थान को सिद्ध नहीं किया गया है, क्योंकि किसी खास बाजार खंड की हैसियत से "कुल उत्पादन" की व्याख्या करने के घरेलू उद्योग के प्रस्ताव की परिकल्पना कानून के प्रावधानों में नहीं की गई है। किसी खास बाजार खंड को बाहर रखने के लिए इसके पास कोई कानूनी प्राधिकार नहीं है। इस प्रकार से स्थान को परिभाषित करने के लिए उपयोग में लाए गए वाहनों के लिए उत्पादन लेने का प्रश्न न्यायोचित नहीं है।
- इसके अलावा, आवद्ध खपत के आशय से उत्पादन पर भी स्थान का आकलन करते समय विचार किया जाना है (संदर्भित मामले; पाकिस्तान से कोम्बड कॉटन यार्न के संबंध में अस्थायी सुरक्षा उपाय)।

प्राधिकारी द्वारा जांच

25. पाटन रोधी नियमावली का नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

"(ख) 'घरेलू उद्योग' का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में 'घरेलू उद्योग' पद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।

26. वर्तमान मामले में आवेदन मैसर्स बांको प्रोडक्ट्स (इंडिया) लिमिटेड द्वारा दायर किया गया है जो विचाराधीन उत्पाद का एक घरेलू उत्पादक और जिसने चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं का आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के मामले में जांच के लिए विस्तृत सूचना प्रदान की है। जांच प्रारंभ करने के चरण में प्राधिकारी ने यह निर्धारण किया कि यह याचिका नियमावली के अंतर्गत स्थान की आवश्यकता को पूरा करता है और याचिकाकर्ता नियमावली के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग था।

27. चूंकि विचाराधीन उत्पाद का उल्लेख "एल्युमीनियम रेडिएटर, एल्युमीनियम रेडिएटर सब असेम्बलीज और एल्युमीनियम रेडिएटर कोर, जिसमें सीकेडी अथवा एसकेडी स्थितियां शामिल हैं, के रूप में नए ऑटोमोबाइल में उपयोग के आशय से एल्युमीनियम रेडिएटरों को बाहर रखते हुए सड़क पर चलने वाले वाहनों और जेनरेटर सेट्स में उपयोग के लिए" किया गया है, प्रतिस्थापन बाजार में उपयोग मात्र में रेडिएटरों के उत्पादन पर विचार स्थान का निर्धारण करने के प्रयोजन से किया गया है। नए वाहनों में उपयोग, अनुप्रयोगों अथवा निर्यात के लिए रेडिएटरों का उत्पादन पर विचार इस प्रयोजन से विचाराधीन उत्पाद के रूप में नहीं किया गया है। केवल प्रतिस्थापन खंड के लिए विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन पर विचार घरेलू उद्योग के स्थान, क्षेत्र और क्षति विश्लेषण के प्रयोजन से किया गया है।

28. जांच प्रारंभ करने के पूर्व, प्राधिकारी ने विभिन्न भारतीय उत्पादकों को उनके समर्थन की पुष्टि करने अथवा विपक्ष को घरेलू उद्योग के स्थान पर निर्णय लेने में सक्षम होने के लिए पत्र भेजा। निम्नलिखित घरेलू उत्पादकों ने पाटनरोधी शुल्कों को लगाने पर अपना लिखित समर्थन दिया है। यद्यपि उन्होंने लागत एवं क्षति की सूचना नहीं दी है।

- a) टाटा टोयो रेडिएटर लि.
 b) वरुण/कोउगर रेडिएटर्स प्रा. लि.
 c) टेक्सन्स रेडिएटर्स प्रा. लि. और
 d) लॉएंड इलेक्ट्रिक एंड इंजीनियरिंग लि.
 e) जी.एस. रेडिएटर्स
29. अलक्राफ्ट थर्मो टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मोडाइन थर्मल सिस्टम्स, एस.एम. ऑटो इंजीनियरिंग प्रा. लि. तथा स्टैंडर्ड रेडिएटर्स प्रा. लि. और डेल्टा रेडिएटर्स भारत में संबद्ध वस्तुओं के अन्य ज्ञात उत्पादक हैं। हालांकि, इन कंपनियों ने वर्तमान जांच और प्रस्तावित उपायों के संबंध में अपने मत व्यक्त नहीं किए हैं।
30. याचिकाकर्ता, समर्थकों और अन्य भारतीय उत्पादकों के उत्पादन का पुनर्निर्धारण विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त सूचना के आधार पर नीचे दिए अनुसार किया गया था:

क्रम सं.	विवरण	संख्या में उत्पादन	उत्पादन में हिस्सा
1	याचिकाकर्ता	****	70.89 %
2	समर्थक	****	21.21 %
3	याचिकाकर्ता + समर्थक	****	92.10 %
4	अन्य (अनुमानित)	****	7.90 %
5	कुल उत्पादन	****	100 %

31. उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राधिकारी यह मानते हैं कि याचिका में नियम 5(3) के अंतर्गत स्थान की आवश्यकता को पूरा किया है और यह नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग है।

पाटन का आकलन – पद्धति एवं मानदंड

ड. बाजार अर्थव्यवस्था विवेचन, सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

सामान्य मूल्य

घरेलू उद्योगों द्वारा किए गए अनुरोध

32. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध नीचे दिए गए हैं:

- चीन को पूर्व मामलों में प्राधिकारी द्वारा ली गई स्थिति के अनुरूप तथा अन्य देशों में जांच करने वाले प्राधिकारियों द्वारा एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था माना जाना चाहिए। चीन के उत्पादकों की लागत और कीमत पर सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु विश्वास नहीं किया जा सकता है।
- बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है जब तक निम्नलिखित शर्तों को पूरा नहीं किया जाएगा:
 - बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा उस स्थिति में नहीं दिया जा सकता है जहां प्रमुख शेयरधारकों में से एक शेयरधारक राज्य के स्वामित्व वाली/उसके नियंत्रणाधीन प्रतिष्ठान हो।
 - बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है जब तक उत्तर देने वाले चीन के निर्यातक यह सिद्ध न करें कि प्रमुख इनपुट्स की कीमतें बाजार मूल्य को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित करती हैं।

- ग. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है जब तक उत्तर देने वाले निर्यातक यह सिद्ध न करें कि उनके बुक की लेखा परीक्षा अंतर्राष्ट्रीय लेखांकन मानदंडों के अनुरूप की गई है।
- घ. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है यदि मानदंडों में से किसी एक मानदंड को भी पूरा न किया जा सके।
- ङ. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा सिद्ध करने की जिम्मेदारी/दायित्व उत्तर देने वाले चीन के निर्यातकों पर न कि निर्दिष्ट प्राधिकारी पर।
- च. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है जब तक उत्तर देने वाली कंपनी और इसका समूह संपूर्ण रूप में दावा नहीं करता हो।
- छ. ऐसी स्थिति में जहां वर्तमान शेयरधारकों ने अपनी उत्पादन सुविधाओं को स्वयं स्थापित नहीं किया है बल्कि उसे कुछ अन्य पक्षकार से प्राप्त किया हो, बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है जब तक रूपांतरण की प्रक्रिया दस्तावेजी साक्ष्य के माध्यम से पूर्ण रूप से सिद्ध न की गई हो।
- iii. इन नियमों के अनुसार, सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नलिखित आधार में से किसी एक आधार पर किया जा सकता है:
- किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत
 - किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में संरचित मूल्य
 - किसी ऐसे तीसरे देश से भारत सहित अन्य देश में कीमत
 - भारत में वास्तविक रूप से प्रदत्त कीमत, जिसका समायोजन उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए किया गया हो।
 - भारत में वास्तविक रूप से भुगतान योग्य कीमत, जिसका समायोजन उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए किया गया हो।
- iv. चूंकि चीन की कंपनियों में से किसी कंपनी द्वारा प्रश्नावली का कोई उत्तर नहीं प्रस्तुत किया गया है, संबद्ध देश को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में माना जाना चाहिए। भारत विचाराधीन उत्पाद के लिए तुलनीय कीमतों के लिए सबसे उपयुक्त देश है।

विरोधी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

33. चीन जन. गण. के किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली का कोई उत्तर नहीं दिया है और उपर्युक्त मामले में एमईटी दर्जे का दावा किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

34. जांच प्रारंभ करने के चरण में, प्राधिकारी चीन जन. गण. को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में मानकर इस पूर्वानुमान के साथ आगे कार्रवाई की। आरंभन के पश्चात प्राधिकारी ने चीन में उत्पादकों/निर्यातकों को जांच आरंभन की सूचना का उत्तर देने तथा अपने बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का निर्धारण करने से संगत सूचना उपलब्ध कराने की सलाह दी। प्राधिकारी ने इस नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(3) में निर्धारित मानदंडों के अनुसार, गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के पूर्वानुमान का खंडन करने के लिए सभी ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को एमईटी प्रश्नावली की प्रतियां भेजीं। प्राधिकारी ने चीन सरकार से अपने देश में संगत सूचना प्रदान करने के लिए उत्पादकों/निर्यातकों को सलाह देने का भी अनुरोध किया। हालांकि, चीन के किसी उत्पादक/निर्यातक ने कोई उत्तर नहीं दिया है।
35. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के पैराग्राफ 8, अनुबंध-1 के अनुसार, यदि निर्यातक पैराग्राफ 8 में उप-पैराग्राफ (3) में उल्लिखित मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य प्रदान करते हैं और इसके प्रतिकूल तथ्यों को सिद्ध करते हैं, तब किसी गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के पूर्वानुमान का खंडन किया जा सकता है। संबद्ध वस्तुओं के निर्यातक/उत्पादक से यह अपेक्षित है कि वे निर्दिष्ट प्राधिकारी को निम्नलिखित

मानदंडों पर विचार करने के लिए सक्षम बनाने हेतु बाजार अर्थव्यवस्था विवेचन प्रश्नावली के उत्तर में पैराग्राफ 8 के उप-पैराग्राफ (3) में यथा उल्लिखित अनिवार्य सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करें कि क्या:

- i. कीमतों, लागतों और इनपुट्स, जिसमें कच्चा माल शामिल है, प्रौद्योगिकी एवं श्रम की लागत, उत्पादन, बिक्री और निवेश के संबंध में चीन जन. गण. में संबंधित प्रतिष्ठानों के निर्णय इस संबंध में राज्य के पर्याप्त हस्तक्षेप के बिना और मांग एवं आपूर्ति को दर्शाते हुए बाजार संकेतों के प्रतिक्रिया स्वरूप की गई है, और क्या प्रमुख इनपुट्स की लागतें पर्याप्त रूप से बाजार मूल्य को दर्शाती हैं।
- ii. ऐसे प्रतिष्ठानों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति पूर्व के गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से लिए गए पर्याप्त विपथनों विशेष रूप से परिसंपत्तियों का ह्रास, अन्य बट्टे खाते डालना, बारटर व्यापार और ऋण की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संबंध में की गई है।
- iii. ऐसे प्रतिष्ठान दिवालियापन और प्रॉपर्टी कानून के अध्यक्षीन हैं जो इन प्रतिष्ठानों के प्रचालन के लिए विधिक निश्चितता और स्थायित्व की गारंटी देते हैं तथा
- iv. विनिमय दर परिवर्तन बाजार दर पर की जाती है।

36. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के किसी उत्पादक और निर्यातक ने निर्यातक की प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है तथा बाजार अर्थव्यवस्था विवेचना प्रश्नावली का उत्तर भी प्रस्तुत नहीं किया है, प्राधिकारी द्वारा जारी की गई जांच प्रारंभन सूचना के उपरांत अथवा गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के पूर्वानुमान का खंडन भी नहीं किया है। उपर्युक्त स्थिति को देखते हुए, प्राधिकारी इसे उचित मानते हैं कि वे चीन जन. गण. के मामले में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु इस नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के साथ आगे बढ़ें। चूंकि, चीन जन. गण. के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने एमईटी की प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है, अतः प्राधिकारी इस निर्धारण के प्रयोजन से चीन के उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देने में सक्षम नहीं हैं।

37. उपर्युक्त तथ्य के देखते हुए कि किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने एमईटी की प्रश्नावली सहित निर्यातक की कोई प्रश्नावली प्रस्तुत नहीं की है, एमईटी का दर्जा चीन के उत्पादकों को नहीं दिया गया है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग सहित किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्राधिकारी को एक उपयुक्त बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश का चयन करने के लिए कोई ठोस तथ्य उपलब्ध नहीं कराया है। अतः, प्राधिकारी ने इस नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के दूसरे परंतुक को ध्यान में रखकर अन्य उचित आधार पर चीन जन. गण. के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

38. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में निम्नलिखित प्रावधान किया गया है:

"गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयात के मामले में, उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए भारत में समान उत्पाद के लिए वास्तविक रूप से भुगतान किया गया अथवा भुगतान योग्य, आवश्यकतानुसार पूर्णतया समायोजित कीमत रहित, सामान्य, मूल्य का निर्धारण तीसरे देश के बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत अथवा परिकलित मूल्य के आधार पर अथवा भारत सहित ऐसे किसी तीसरे देश से अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव नहीं है, या किसी अन्य उचित आधार पर किया जाएगा। संबद्ध देश के विकास के स्तर तथा संबद्ध उत्पाद को देखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यथोचित पद्धति द्वारा एक समुचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश का चयन किया जाएगा और चयन के समय पर उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना पर यथोचित रूप से विचार किया जाएगा। बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी अन्य तीसरे देश के संबंध में किसी समयानुरूपी मामले में की जाने वाली जांच के मामले में जहां उचित हों, समय-सीमा के भीतर कार्रवाई की जाएगी। जांच से संबंधित पक्षकारों को किसी अनुचित विलंब के बिना बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के चयन के विशेष में सूचित किया जाएगा और अपनी टिप्पणियां देने के लिए एक समुचित समयावधि प्रदान की जाएगी।"

39. उपर्युक्त को देखते हुए भारत में चीन जन. गण. से आयात किए गए संबद्ध उत्पादों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन की लागत के संबंध में सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर विचार कर तथा बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक खर्च एवं उचित लाभ मार्जिन के लिए उचित जोड़ के बाद "किसी अन्य आधार" पर किया गया है। सामान्य मूल्य की संरचना घरेलू उद्योग द्वारा दी गई सूचना के अनुसार प्रमुख कच्चे माल की खपत, प्रमुख कच्चे माल के लिए अंतर्राष्ट्रीय कीमत, परिवर्तन लागत, ब्याज, एसजीए इत्यादि का वह स्तर, जिसे घरेलू उद्योग की अनुमति दी गई है, पर विचार करने के बाद की गई है। इसके अलावा, बिक्री की लागत का 5 प्रतिशत उचित लाभ के प्रति जोड़ा गया है।

चीन जन. गण. के लिए निर्यात कीमत

40. चूंकि संबद्ध देश के किसी निर्यातक ने प्राधिकारी को उस रूप में अथवा निर्धारित तरीके से उत्तर नहीं दिया है जिसका उपयोग निर्यात कीमत और अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए किया जा सकता है, प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस लेन-देन वार आंकड़ों के आधार पर उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। इसके अलावा, लागतों में पर्याप्त अंतर और उसके परिणामस्वरूप विचाराधीन उत्पाद के विभिन्न प्रकारों की कीमतों में अंतर को देखते हुए, प्राधिकारी ने एक पीसीएन पद्धति बनाई है और उसे प्रत्येक पीसीएन के लिए सामान्य मूल्य, निर्यात मूल्य और पाटन मार्जिन के निर्धारण और उसकी तुलना के लिए अपनाया जा रहा है।
41. समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन, पत्तन संबंधी खर्च, अंतर्देशीय भाड़े खर्च, जिन्हें निर्यातक द्वारा भारत में माल का निर्यात करने के लिए किया गया हो, के कारण निर्यात कीमत का समायोजन किया गया है। ऊपर में उल्लेख किए गए खर्चों के समायोजन के पश्चात बैंक शुल्क, निवल निर्यात कीमत का निर्धारण किया जाता है।

पाटन मार्जिन का निर्धारण

42. संबद्ध वस्तुओं के डीजीसीआईएंडएस आयात आंकड़ों के अनुसार, 6 उत्पाद प्रकारों का आयात किया गया है, नामतः कार कोर, कार कंपलीट, ट्रक और बस कोर, ट्रक और बस कंपलीट, ट्रैक्टर कोर और ट्रैक्टर कंपलीट। हालांकि, संबद्ध वस्तुओं का आयात संबंधी अनेक लेन-देन की पहचान पीसीएन वार नहीं की जा सकी और उन्हें पाटन मार्जिन की गणना के समय ध्यान में नहीं रखा गया है। जेनसेट कोर और जेनसेट कंपलीट के लिए आयात आंकड़े आईबीआईएस से लिए गए हैं क्योंकि वे डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों से पहचान किए जाने योग्य नहीं थे।
43. पीसीएन के आधार पर उत्पाद की संबद्ध लागत और कीमतों में व्यापक अंतर को देखते हुए, प्राधिकारी ने प्रत्येक उत्पाद प्रकार के लिए अलग-अलग सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है और उसके बाद अलग-अलग पाटन मार्जिन की भारित औसत के आधार पर विचाराधीन उत्पाद के लिए पाटन मार्जिन की मात्रा तय की है।
44. ऊपर में उल्लेख की गई पद्धति के आधार पर, चीन के मामले में पीसीएन-वार संरचित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन तय किया गया है। इसके अलावा, उत्पाद की संबद्ध लागतों और कीमतों में पर्याप्त अंतर को देखते हुए प्राधिकारी ने प्रत्येक उत्पाद प्रकार के लिए अलग-अलग सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है और उसके बाद अलग-अलग पाटन मार्जिन की भारित औसत के आधार पर विचाराधीन उत्पाद के लिए पाटन मार्जिन की मात्रा तय की है।

निवल निर्यात कीमत		संरचित साधारण मूल्य		पाटन मार्जिन		
अमेरिकी डॉलर/सं.	रु./सं.	अमेरिकी डॉलर/सं.	रु./सं.	अमेरिकी डॉलर/सं.	रु./सं.	रेंज %
7.03	436.71	***	****	***	***	300-350

45. यह देखा गया है कि संबद्ध वस्तुओं के लिए पाटन मार्जिन संबद्ध देश से आयातों के लिए न्यूनतम से अधिक है।
- क्षति के निर्धारण के लिए पद्धति

घरेलू उद्योगों द्वारा किए गए अनुरोध

46. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध नीचे दिए गए हैं:

- i. क्षति की पूरी अवधि के दौरान मांग में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है।
- ii. यह याचिका आईबीआईएस आंकड़ों के आधार पर दी गई थी। हालांकि, जो भी डीजीसीआईएंडएस आंकड़े प्राप्त हुए, उससे यह लगता है कि विचाराधीन उत्पाद का आयात और अधिक हुआ है।
- iii. उत्पादन और खपत की तुलना में आयात भी क्षति की पूरी अवधि के दौरान अधिक रहा है।
- iv. संबद्ध देश से आयातों की अवतरित कीमत जांच की अवधि में घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से कम है।
- v. आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में बहुत अधिक कटौती कर रहा है।
- vi. आयातों की अवतरित कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत, बिक्री की लागत और एनआईपी से बहुत कम रही है।
- vii. इस प्रकार से पाटित आयातों के प्रभाव से काफी हद तक कीमतों में मंदी आएगी और कीमत की वृद्धि को रोकेगा जो अन्य प्रकार से बहुत अधिक सीमा तक होता।
- viii. घरेलू उद्योग का उत्पादन और बिक्री, जांच की अवधि के दौरान बढ़े हैं।
- ix. याचिकाकर्ता ने प्रस्तावित जांच की अवधि में क्षमता का विस्तार किया है। यह क्षमता समग्र संयंत्र के लिए है।
- x. संयंत्र का क्षमता उपयोग जांच की अवधि में बढ़ा है।
- xi. याचिकाकर्ता ने वित्तीय घाटे पर भी बाजार ने अपने उत्पादों को बेचने के लिए बहुत अधिक प्रयास किया है और इस कारण से मात्रा संबंधी मानदंड पाटन के प्रभाव को नहीं दर्शाते हैं।
- xii. घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा याचिकाकर्ता द्वारा किए गए बहुत प्रयासों को देखते हुए क्षति की अवधि में बढ़ा है। संबद्ध देश का बाजार हिस्सा क्षति की पूरी अवधि के दौरान बहुत अधिक रहा है।
- xiii. आयातों का अवतरित मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री की कीमत और बिक्री की लागत के स्तर से नीचे रहा है। घरेलू उद्योग की बिक्री की कीमत, बिक्री की लागत के स्तर से कम है।
- xiv. संबद्ध देश से निम्न कीमत पर आयातों ने याचिकाकर्ता को अपनी कीमतों को कम करने के लिए बाध्य किया। इसके फलस्वरूप, याचिकाकर्ता क्षति की पूरी अवधि के दौरान वित्तीय घाटा उठाने के लिए मजबूर हुआ। इसके अलावा, ये घाटे जांच की अवधि में और अधिक हो गए हैं।
- xv. ब्याज पूर्व लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय की भी वही प्रवृत्ति रही जो लाभ की प्रवृत्ति थी।
- xvi. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट बिना किसी औचित्यपूर्ण कारणों से आयात कीमतों में कमी के कारण हुई। घरेलू उद्योग पर्याप्त पाटन के फलस्वरूप बहुत अधिक वित्तीय घाटा उठा रहा है।
- xvii. घरेलू उद्योग के पास माल भंडार में जांच की अवधि में बहुत अधिक वृद्धि के साथ क्षति की संपूर्ण अवधि में वृद्धि दर्शाई है। मांग के स्तर में वृद्धि के बावजूद यह स्थिति बनी हुई है।
- xviii. संबद्ध देश से आयात कीमतों, लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्द्धा, पाटित आयातों के अलावा अन्य कारक, जो घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे होंगे, पर विचार करने से यह दृष्टिगत होगा कि संबद्ध देश से आयात किए गए माल का अवतरित मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री की कीमत तथा बिक्री की लागत के स्तर से बहुत कम है जिसके कारण भारतीय बाजार में कीमत में बहुत अधिक कटौती हुई है और कीमत पर दबाव आया है।
- xix. इस उत्पाद का कोई व्यावहारिक प्रतिस्थापन नहीं है। इस उत्पाद की मांग ने वृद्धि दर्शाई है और यह एक कारक नहीं हो सकता था जिसे प्रस्तावित जांच की अवधि में घरेलू उद्योग द्वारा सामना किए जा रहे कीमत

पर दबाव के लिए जिम्मेदार माना जाए। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की कीमतों के लिए जिम्मेदार एकमात्र कारक इस उत्पाद की आयात कीमत है।

- xx. रोजगार और मजदूरी में क्षति की अवधि में सुधार हुआ है। रोजगार और मजदूरी संबद्ध वस्तुओं के कार्यनिष्पादन पर ही निर्भर नहीं है। यह देश में अनेक विधायी आवश्यकताओं से शासित होता है। मजदूरी और रोजगार में यह वृद्धि जांच की अवधि में नई क्षमताओं की स्थापना और उत्पादन में वृद्धि का परिणाम है। रोजगार और वृद्धि घरेलू उद्योग के प्रतिकूल कार्यनिष्पादन को नहीं दर्शाता है क्योंकि ये कारक कंपनी और अर्थव्यवस्था के समग्र प्रचालन द्वारा शासित होता है।
- xxi. प्रतिदिन उत्पादकता तथा प्रति कर्मचारी उत्पादकता में उत्पादन में वृद्धि के अनुरूप क्षति की अवधि में वृद्धि हुई है।
- xxii. पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम से अधिक बल्कि बहुत अधिक भी है। घरेलू उद्योग पर पाटन का प्रभाव प्रतिकूल है।
- xxiii. कीमत मानदंडों में अधिकांश मानदंड जांच की अवधि में नकारात्मक हैं।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के दृष्टिकोण

- 47. क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में किसी उत्पादक/निर्यातक/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कोई अनुरोध नहीं किया गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

- 48. इस संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों पर विचार करने के बाद, प्राधिकारी संबद्ध देश से आयातों के कारण हुई क्षति की जांच करने की कार्रवाई करने के पूर्व घरेलू उद्योग को वर्तमान क्षमता, यदि कोई हो, की जांच करने की कार्रवाई करते हैं।
- 49. डब्ल्यू टी ओ करार के अनुच्छेद 3.1 और नियमावली के अनुबंध-II में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव। पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पादों की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसा कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती।

- 50. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच शामिल होगी:

क. समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों की मात्रा और पाटित आयातों का प्रभाव; तथा
ख. ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव।

- 51. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों तथा तथ्यों पर वस्तुनिष्ठ ढंग से विचार करते हुए क्षति के मानदंडों की जांच की है।

च. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का प्रभाव

- 52. घरेलू उद्योग तथा उसके उत्पादन पर पाटित आयातों के प्रभाव का विश्लेषण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के संबंध में किया गया था जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित उल्लेख किया गया है:

"(iv) "संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों, घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

"(vi) पाटित आयातों के प्रभाव का आकलन समान वस्तु के घरेलू उत्पादन की तुलना में किया जाएगा जब उपलब्ध आंकड़े उत्पादन की प्रक्रिया, उत्पादक की बिक्री और लाभ के रूप में ऐसे मानदंडों के आधार पर उस उत्पादन की अलग-अलग पहचान की अनुमति देते हों। यदि उस उत्पादन का इस प्रकार की अलग-अलग पहचान संभव नहीं हो तब पाटित आयातों के प्रभावों का आकलन निकटतम समूह का उत्पादन अथवा उत्पादों की श्रेणी, जिसमें वह समान वस्तु शामिल होती हो, जिसके लिए आवश्यक सूचना दी जा सकती है, की जांच द्वारा की जाएगी।"

53. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों और तथ्यों के आधार पर विभिन्न क्षति मानदंडों की जांच की है।

क) आयात की मात्रा

54. डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों के अनुसार, संबद्ध देश से आयात की मात्रा की पहचान और उसकी तालिका नीचे दिए अनुसार बनाई गई है। आंकड़ों के अनुसार, 6 विभिन्न उत्पाद प्रकारों का आयात किया गया है, नामतः कार कोर, कार कंपलीट, ट्रक और बस कोर, ट्रक और बस कंपलीट, ट्रैक्टर कोर और ट्रैक्टर कंपलीट। इसके अलावा, संबद्ध वस्तुओं का अनेक आयात लेन-देन हुए थे, जिनकी पहचान किसी विशिष्ट पीसीएन के अंतर्गत नहीं की जा सकी बल्कि क्षति विश्लेषण के लिए उन पर विचार किया गया है। पहचान न किए गए इन आयात लेन-देन में संभवतः जेनसेट कोर और कंपलीट का आयात शामिल हो सकता है।

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई	पीओआई (ए)
चीन	सं.	199,880	184,584	341,050	4,81,635	3,85,308
अन्य देश	सं.	7,226	1,285	1,491	4,636	3,709
कुल आयात	सं.	207,106	185,869	342,541	4,86,271	3,89,017

55. यह देखा गया है कि आयातों में क्षति की अवधि के दौरान, स्वतंत्र रूप में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। जबकि विचाराधीन उत्पाद की मांग में लगभग 39% की वृद्धि हुई है, चीन से विचाराधीन उत्पाद के आयात में लगभग 93 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और तीसरे देशों से आयात में 49 प्रतिशत की गिरावट आई है।

ख) मांग और बाजार हिस्सा

56. संबद्ध वस्तुओं की मांग/खपत का निर्धारण संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों और घरेलू समान उत्पादों की घरेलू बिक्री को जोड़कर किया गया है। यह उल्लेख किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद की मांग में क्षति की पूरी अवधि के दौरान वृद्धि हुई है जिसे नीचे दी गई तालिका से देखा जा सकता है। इसके अलावा, मांग में संबद्ध देश के बाजार हिस्से में भी क्षति की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है जबकि अन्य देशों और भारतीय उत्पादकों के समग्र रूप से बाजार हिस्सा में गिरावट आई है।

विवरण	यूओएम	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई (ए)
घरेलू उद्योग	संख्या	****	****	****	****

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	136	139	213
अन्य भारतीय उत्पादक	संख्या	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	83	67	50
संबद्ध देश - चीन	संख्या	199,880	184,584	341,050	385,308
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	92	171	193
अन्य देश	संख्या	7,226	1,285	1,491	3,709
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	18	21	51
मांग/खपत	संख्या	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	97	121	139
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	140	115	154
अन्य भारतीय उत्पादक	%	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	86	55	36
भारतीय उत्पादक समग्र रूप में	%	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	76	77
संबद्ध देश - चीन	%	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	95	141	139
अन्य देश	%	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	18	17	37

ग) खपत की तुलना में आयात और कुल आयात

57. संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के आयातों में भारत में कुल आयात, उत्पादों और खपत की तुलना में वृद्धि हुई है जिसे नीचे दर्शाया गया है:

की तुलना में चीन का आयात	%	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई (ए)
कुल आयात	%	96.51	99.31	99.56	99.05
कुल मांग/खपत	%	37.65	35.8	53.19	52.29

घ) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

58. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में, इस नियमावली के अनुबंध-II(ii) नीचे दिया गया है:

“जहां तक नियम 18 के उप नियम (2) में किए गए उल्लेखानुसार कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमत में होने वाली वृद्धि में अन्यथा काफी अधिक ह्रास हुआ है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी हद तक वृद्धि हो गई होती।”

59. यह जांच की गई है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत के साथ तुलना किए गए पाटित आयातों द्वारा कीमत की बहुत अधिक कटौती हुई है अथवा क्या इस प्रकार के आयातों के प्रभाव से अन्य प्रकार से बहुत अधिक मात्रा में कीमत पर दबाव होगा अथवा कीमत में वृद्धि रुकेगी जो अन्य प्रकार से बहुत अधिक मात्रा तक हो गई होती। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच कीमत में कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत पर दबाव और कीमत स्थिरता, यदि कोई हो, के संबंध में की गई है। विभिन्न कीमत मानदंडों के लिए विश्लेषण का आधार 6 पहचान किए गए उत्पादों के लिए डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों तथा जेनसेट कोर तथा जेनसेट कंपलीट के लिए आईबीआईएस आंकड़े रहे हैं।

ड) कीमत में कटौती

60. इस बात का निर्धारण करने के उद्देश्य से कि क्या आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से आयातों की अवतरित कीमत से तुलना की है। घरेलू उद्योग की कीमतों का निर्धारण कारखानागत स्तर पर किया गया था और सभी छूट एवं करों के योग को घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत और उत्पाद के अवतरित मूल्य के बीच की गई है। इस तुलना ने दर्शाया कि जांच की अवधि के दौरान, चीन के मूल की संबद्ध वस्तुओं का आयात भारतीय बाजार में उन कीमतों पर की गई थी, जो घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों से कम थी। इस प्रकार से यह नोट किया गया है कि संबद्ध वस्तुओं के आयातों से घरेलू कीमतों में कटौती हो रही थी और कटौती का मार्जिन नीचे दी गई तालिका में दर्शाया गया है। विभिन्न बाजार खंडों में बेचे गए और उत्पादित विचाराधीन उत्पाद की लागत और कीमत में बहुत अधिक अंतर को देखते हुए, कीमत में कटौती का विश्लेषण पीसीएन-वार किया गया था और उसके बाद कीमत की कटौती की मात्रा विचाराधीन उत्पाद के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन के भारित औसत के आधार पर तय की गई थी।

अवतरित मूल्य रु./सं.	निवल बिक्री प्राप्ति रु./सं.	कीमत में कटौती रु./सं.	कीमत में कटौती %
504	****	****	60-70

61. यह देखा गया है कि संबद्ध देश से आयातों की अवतरित कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है और इस प्रकार से परिणामस्वरूप कीमत में बहुत अधिक कटौती हुई है।

च) कीमत में स्थिरीकरण/कीमत पर दबाव

62. इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या आयातों के प्रभाव से कीमतों पर बहुत अधिक मात्रा में दबाव पड़ेगा अथवा कीमतों की वृद्धि रुक जाएगी जो अन्य प्रकार से हुई होती, प्राधिकारी ने जांच की अवधि के दौरान लागतों और कीमतों में परिवर्तन की जांच की। स्थिति नीचे दी गई तालिका में दर्शाई गई है:

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
बिक्री की लागत	रु./यूनिट	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	100	97	89
बिक्री कीमत	रु./यूनिट	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	100	96	89

63. घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों का कीमत दबाव एवं स्थिरीकरण के प्रभावों की जांच करने के लिए, घरेलू उद्योग की निवल बिक्री, प्राप्ति की प्रवृत्ति की तुलना बिक्री की लागत से की गई है। यह देखा गया है कि लागत और कीमत, दोनों में क्षति की अवधि के दौरान गिरावट आई है। यह भी नोट किया गया है कि आयातों की अवतरित कीमत घरेलू उद्योग की उत्पादन की लागत से बहुत कम रही है।

छ. कम कीमत पर बिक्री करना

64. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमत पर बिक्री करना, क्षति के आकलन का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। क्षतिरहित कीमत का निर्धारण एवं तुलना कम कीमत पर बिक्री की सीमा पर पहुँचने के लिए संबद्ध वस्तुओं की अवतरित कीमत के साथ की गई है। क्षतिरहित कीमत का निर्धारण जांच की अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत पर पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के अनुसार विचार करने के बाद की गई है। बाजार में बेची गई और उत्पादन की गई विचाराधीन उत्पाद की लागत और कीमत में बहुत अधिक अंतर को देखते हुए, अवतरित कीमत और एनआईपी का विश्लेषण पीसीएन-वार किया गया था और उसके बाद कम कीमत पर बिक्री की मात्रा अलग-अलग पाटन मार्जिन के भारित औसत के आधार पर विचाराधीन उत्पाद के लिए की गई थी।

अवतरित मूल्य रु./सं.	क्षतिरहित कीमत रु./सं.	क्षति मार्जिन रु./सं.	क्षति मार्जिन %
504	***	***	300-350

झ. घरेलू उद्योग के आर्थिक मानदंडों पर प्रभाव

65. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव का एक वस्तुपरक जांच शामिल होगी। इसके अलावा, इस नियमावली में यह प्रावधान है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक कारकों तथा बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता के उपयोग में वास्तविक और संभावित गिरावट सहित उद्योग के हालात पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों तथा सूचकांकों; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारकों, पाटन के मार्जिन का आकार; नकदी के प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, विकास, पूंजी निवेश प्राप्त करने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले कारकों का एक वस्तुपरक और पक्षपातरहित मूल्यांकन शामिल होगा। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति मानदंडों की चर्चा नीचे की गई है।

i. क्षमता, उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग और मालसूची

66. घरेलू उद्योग से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित तालिका में दर्शाए गए हैं:

विवरण	यूओएम	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई (ए)
क्षमता	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	113
उत्पादन-पीयूसी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	133	142	223
उत्पादन/एनपीयूसी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	85	102	111
उत्पादन-कुल	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	113	143
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	113	126
बिक्री की मात्रा	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	136	139	213
औसत भंडार	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	87	112	352

67. यह नोट किया जाता है कि:

क. घरेलू उद्योग की क्षमता में जांच की अवधि में वृद्धि हुई है।

ख. घरेलू उद्योग का उत्पादन क्षति की पूरी अवधि में बढ़ा है।

ग. घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग का निर्धारण अन्य प्रकार के रेडिएटर्स के उत्पादन को शामिल करने के बाद किया गया है क्योंकि विचाराधीन उत्पाद के लिए उत्पादन क्षमताएं केवल विचाराधीन उत्पाद के लिए समर्पित नहीं हैं। अन्य प्रकार के रेडिएटर्स के उत्पादन को जोड़ने के बाद निर्धारित किए गए क्षमता उपयोग भी क्षति की अवधि के दौरान वृद्धि को दर्शाता है।

घ. घरेलू उद्योग की बिक्री ने भी उसी प्रवृत्ति को अपनाया है, जो उत्पादन और क्षमता के उपयोग का है। घरेलू उद्योग की बिक्री में क्षति की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

ड. घरेलू उद्योग के पास मालसूची में क्षति की अवधि के दौरान बहुत अधिक वृद्धि हुई है।

ii. लाभ, निवेश पर आय और नकदी का प्रवाह

68. घरेलू उद्योग से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित तालिका में दर्शाए गए हैं:

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई (ए)
कर पूर्व लाभ	रु. लाख	(***)	(***)	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(136)	(140)	(188)
ब्याज पूर्व लाभ	रु. लाख	(***)	(***)	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(132)	(121)	(195)
नकद लाभ	रु. लाख	(***)	(***)	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(126)	(103)	(154)
नियोजित पूंजी पर आय	%	(***)	(***)	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(84)	(68)	(85)

69. यह नोट किया जाता है कि:

क. संबद्ध देश से निम्न कीमत पर किए गए आयात ने याचिकाकर्ता को यह उत्पाद लाभप्रद कीमतों से कम कीमत पर बेचने के लिए मजबूर किया जिसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति की पूरी अवधि के दौरान घाटा उठाना पड़ा। ये घाटे जांच की अवधि के दौरान और बढ़ गए।

ख. ब्याज पूर्व लाभ बहुत अधिक नकारात्मक था और यह क्षति की अवधि के दौरान और अधिक बदतर हो गया। घरेलू उद्योग अपनी ब्याज लागत प्राप्त करने में सक्षम नहीं था।

ग. घरेलू उद्योग को नकद घाटे तथा निवेश पर नकारात्मक आय भी हुई।

70. इस प्रकार से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग को बहुत अधिक पाटन के फलस्वरूप अत्यधिक वित्तीय घाटा हो रहा है जिसके फलस्वरूप बहुत अधिक नकद घाटे और निवेश पर नकारात्मक आय हुई।

iii. रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता

71. रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता के संबंध में घरेलू उद्योग की स्थिति नीचे दिए अनुसार थी:

विवरण	यूओएम	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई (ए)
वेतन और मजदूरी	रु. लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	132	128	189
कर्मचारी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	123	110	184
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	129	122
प्रति दिन उत्पादकता	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	113	143

72. यह देखा गया है कि रोजगार, मजदूरी एवं उत्पादकता में क्षति की अवधि में वृद्धि हुई है।

iv. विकास

73. विभिन्न मानदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग का विकास नीचे दिए अनुसार था। यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग का विकास मात्रा के मानदंडों के संबंध में सकारात्मक और कीमत के मानदंडों के संबंध में नकारात्मक था।

वृद्धि	यूओएम	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
उत्पादन	%	-	33	7	57
बिक्री	%	-	36	3	53
क्षमता उपयोग	%	-	(1)	(8)	(7)
कर पूर्व लाभ	%	-	0	0	12
ब्याज पूर्व लाभ	%	-	(32)	8	(61)
नकद लाभ	%	-	(26)	18	(50)
नियोजित पूंजी पर आय	%	-	4	4	(5)

v. घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

74. चीन से आयात कीमतों, लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्द्धा, पाटित आयातों के अलावा अन्य कारक, जो घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे होंगे, की जांच करने से यह दृष्टिगत होता है कि चीन से आयात किए गए माल का अवतरित मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री की कीमत तथा बिक्री की लागत के स्तर से बहुत कम है जिसके कारण भारतीय बाजार में कीमत में बहुत अधिक कटौती हुई है और कीमत पर दबाव आया है। यह भी नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तुओं की मांग जांच की अवधि सहित क्षति की अवधि के दौरान बहुत अधिक वृद्धि दर्शा रही थी और इस कारण से यह घरेलू कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाला एक कारक नहीं हो सकता था। इस प्रकार से घरेलू कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाला प्रमुख कारक संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का पाटित आयात है।

vi. पाटन का आकार और मार्जिन

75. चीन से आयात पाटन मार्जिन के न्यूनतम स्तर से बहुत अधिक है। पाटन मार्जिन बहुत अधिक उच्च है। ऐसे उच्च पाटन मार्जिन के आकार के साथ, पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को बहुत अधिक क्षति हो रही है।

vii. क्षति संबंधी निष्कर्ष

76. दर्ज सूचना के संबंध में तथा घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन की जांच करने के बाद, प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि चीन से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों में स्वतंत्र रूप में तथा भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन और खपत की तुलना में वृद्धि हुई है। उत्पाद का आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में बहुत अधिक कटौती कर रहा है। इन आयातों के फलस्वरूप बाजार में कीमतों में कटौती हो रही है और घरेलू उद्योग को अपनी कीमत उस स्तर तक बढ़ाने से यह रोक रहा है जहां घरेलू उद्योग निवेश पर उचित आय अर्जित कर सके। उत्पाद की मांग में बहुत अधिक वृद्धि हुई है और परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री में भी वृद्धि हुई। हालांकि, घरेलू उद्योग का कार्य निष्पादन मालसूची, लाभ, नकदी के प्रवाह और निवेश पर आय के संबंध में और बदतर हो गया। लाभ, नकद लाभ, पूंजी पर आय जैसे कीमत के मानदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग का विकास नकारात्मक था।

77. प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कीमत के प्रतिकूल प्रभाव के संबंध में क्षति हुई है जिसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति की पूरी अवधि के दौरान घाटा हुआ है, नकारात्मक नकद लाभ हुआ है और नियोजित पूंजी पर नकारात्मक आय प्राप्त हुई है।

viii. जिम्मेदार न मानने संबंधी विश्लेषण

78. प्राधिकारी ने जांच की है कि क्या पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत सूचीबद्ध कारकों ने घरेलू उद्योग को क्षति में योगदान किया होगा। घरेलू उद्योग को पाटन और पर्याप्त क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की जांच नीचे दिए अनुसार की गई है:
- क. खपत की पद्धति में परिवर्तन: विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत की पद्धति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस कारण से खपत की पद्धति में परिवर्तन घरेलू उद्योग को क्षति नहीं पहुंचा सकता था।
 - ख. विदेशी और घरेलू उत्पादों के बीच व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और प्रतियोगिता: ऐसा कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथा नहीं है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती थी।
 - ग. प्रौद्योगिकी का विकास: इस उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस कारण से, प्रौद्योगिकी का विकास क्षति का कारक नहीं है।
 - घ. निर्यात निष्पादन: याचिकाकर्ता ने क्षति की अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया है। हालांकि, घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति सड़क पर चलने वाले वाहनों और जेनरेटर सेट के उपयोग को छोड़कर घरेलू प्रचालनों के कारण हुई है। याचिकाकर्ता ने अलग-अलग विचाराधीन उत्पाद के लिए लागत और क्षति संबंधी सूचना नहीं दी है। अतः विचाराधीन उत्पाद को क्षति का कारण निर्यात को नहीं माना जा सकता है।
 - ड. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन तथा बिक्री किए जा रहे अन्य उत्पादों का कार्य निष्पादन: घरेलू उद्योग का दावा की गई क्षति विचाराधीन उत्पाद के कारण नहीं हुई है।
79. प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सूचीबद्ध ज्ञात अन्य कारकों ने घरेलू उद्योग को क्षति नहीं पहुँचाई है।

ब. कारणात्मक संबंध

कारणात्मक संबंध को सिद्ध करने वाले कारक:

80. प्राधिकारी नोट करते हैं कि निम्नलिखित मानदंड यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है:
- क. घरेलू उद्योग और विदेशी उत्पादों द्वारा पेशकश की गई कीमतों के बीच बहुत अंतर है। इसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग को अपनी कीमत उस स्तर तक बढ़ाने से रोका गया जहाँ इसे उचित लाभ हो सकता था।
 - ख. आयातित उत्पाद घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती कर रहा था। इसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग को कीमतें उत्पादन की लागत में वृद्धि की सीमा तक बढ़ाने से रोका गया है।
 - ग. घाटे, नकारात्मक नकद लाभ और सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान नियोजित पूंजी पर नकारात्मक आय प्रत्यक्ष रूप से पाटित आयातों का परिणाम है।
 - घ. आयातों में अत्यधिक वृद्धि के फलस्वरूप घरेलू उद्योग के पास बहुत अधिक भंडार जमा हो गया।
 - ड. संबद्ध आयातों का बाजार हिस्सा बहुत अधिक रहा। इसके फलस्वरूप घरेलू उत्पादों के बाजार हिस्से में गिरावट आई है।
 - च. घरेलू उद्योग का विकास पाटित आयातों के फलस्वरूप अनेक मानदंडों के संबंध में नकारात्मक था।

ट. क्षति का आकार और क्षति मार्जिन

81. प्राधिकारी ने यथा संशोधित नियमावली में निर्धारित सिद्धांतों के आधार पर घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का निर्धारण किया है। इस प्रकार से निर्धारित क्षतिरहित कीमत की तुलना संबद्ध देश से आयातों की अवतरित कीमतों से की गई है। इस प्रकार से निर्धारित क्षति मार्जिन बहुत अधिक है।

अवतरित मूल्य		क्षतिरहित कीमत		क्षति मार्जिन		
रु./सं.	अमेरिकी डॉलर/सं.	रु./सं.	अमेरिकी डॉलर/सं.	रु./सं.	अमेरिकी डॉलर/सं.	रेंज %
504	8.11	***	***	***	***	300-350

ट. प्रकटन-पश्चात की टिप्पणियां

82. प्रकटन के बाद के स्तर पर उठाए गए मुद्दों को पहले भी जाँच के दौरान उठाया गया है और उचित ढंग से उनका समाधान किया गया है। तथापि स्पष्टता के लिए हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए अनुरोधों का नीचे सारांश दिया गया है और उनका समाधान किया गया है।

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

83. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध निम्नानुसार हैं :

- i. याचिकाकर्ता ने प्राधिकारी से पीयूसी के विस्तृत विवरण को स्पष्टता और शुल्क अधिसूचना के उचित कार्यान्वयन के लिए शुल्क तालिका में नोट के रूप में जोड़ने का अनुरोध किया है।
- ii. याचिकाकर्ताओं ने क्षतिरहित कीमत की गणना से संबंधित मुद्दे उठाये हैं। उन्होंने निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखते हुए एनआईपी के निर्धारण के लिए कहा है:
 - (क) उत्पादन लागत से संबंधित सूचना और आकड़ों पर विचार करने के लिए अवधि के चयन के संबंध में अनुबंध III के नियम 3 और नियम 4 के बीच विरोधाभास है। इत: यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि अनुबंध III के अधीन बनाये गए नियमों का पाटनरोधी शुल्क की ऐसी राशि निर्धारित करने के लिए सुमेलीकृत व्याख्या की जानी चाहिए जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करेगी।
 - (ख) नियम 3 के अनुसार, पीओआई के लिए उत्पादन लागत से संबंधित सूचना या आकड़ों पर विचार किया जाना चाहिए और नियम 4 के अनुसार पिछले तीन वर्षों और जाँच अवधि के दौरान कच्ची सामग्रियों/सुविधाओं/उत्पादन क्षमताओं के सर्वोत्तम उपयोग पर क्षति को समाप्त करने के लिए विचार किया जाना चाहिए।
 - (ग) क्षति के आकलन के प्रयोजनार्थ अवधि के चयन के संबंध में स्पष्ट विरोधाभास है। तथापि नियम 4 का प्रयोजन अलग है। नियम 4 तभी लागू होता है यदि कच्ची सामग्रियों/सुविधाओं/उत्पादन क्षमताओं का अकुशल उपयोग हुआ हो। यदि घरेलू उद्योग द्वारा कच्ची सामग्रियों/सुविधाओं/उत्पादन क्षमताओं का कोई अकुशल प्रयोग नहीं हुआ है तो नियम 4 लागू ही नहीं होगा। इसलिए प्राधिकारी पीओआई से इतर अवधि पर केवल तभी विचार कर सकते हैं जब संसाधनों का अकुशल उपयोग हुआ हो।
 - (घ) केवल इसलिए कि कच्ची सामग्रियों/सुविधाओं का उपयोग पीओआई में गणितीय रूप से अधिक है, कोई स्वतः घरेलू उद्योग द्वारा कच्ची सामग्रियों/सुविधाओं/उत्पादन क्षमताओं के "अकुशल प्रयोग" का अनुमान नहीं लगा सकता है। वस्तुतः कच्ची सामग्रियों या सुविधाओं का कोई अकुशल उपयोग नहीं हुआ है और ऐसा कोई अंतर सही मंशा का अंतर है।
 - (ङ) चूंकि अनुबंध-III में अकुशल उपयोग के कारण क्षति को अलग करने का प्रावधान है, इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को कच्ची सामग्रियों और सुविधाओं के अकुशल उपयोग का अनुमान लगाकर एनआईपी को कम नहीं करेंगे।

- (च) याचिकाकर्ताओं ने यह बताया है कि कच्ची सामग्रियों या सुविधाओं या उत्पादन क्षमताओं को कोई अकुशल उपयोग नहीं हुआ है। इन मापदंडों में कोई अंतर सदभावना में है और अकुशल उपयोग नहीं है। पीओआई के दौरान कमतर क्षमता उपयोग उत्पादन क्षमताओं के अकुशल उपयोग के कारण नहीं हुआ है।
- (छ) नियमों में व्यवस्था है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी कारखाना-द्वार स्तर पर क्षतिरहित कीमत पर विचार करेंगे। बिक्री कर, उत्पाद शुल्क, छूटों, कमीशन कारखाना द्वार स्तर पर देय हैं और इसलिए यह तथ्य कि क्षति मार्जिन को कारखाना-द्वार स्तर पर निर्धारित किये जाने का यह अर्थ नहीं है कि बिक्री कर और उत्पाद शुल्क को नहीं जोड़ा जा सकता है।
- (ज) याचिकाकर्ताओं ने बताया है कि इसका कोई कारण नहीं है कि एनआईपी केवल "कारखाना-द्वार" स्तर पर हो। अनुबंध-III के अधीन ऐसा कोई अनिवार्य निर्धारण अनुबंध-II को उसकी विरोधाभासी बना देगा। किसी पक्षपात के बिना, यदि एनआईपी कारखाना-द्वार स्तर पर होना भी चाहिए, तो एनआईपी की आयात कीमत से तुलना के समय उचित तुलना के सिद्धांतों पर विचार और उन पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- (झ) नियम (vii)(ख) के अधीन सभी बाह्य मालभाड़ा व्ययों की भी अनुमति नहीं है। परंतु कारखाने से भांडागार में वस्तुओं को स्थानांतरित करते समय कुछ बाह्य मालभाड़ा व्यय भी होते हैं और उन्हें भांडागार से बेचा जाता है। ऐसे मामले में, कारखाने से भांडागार तक परिवहन लागत को एनआईपी की गणना करते समय अवश्य शामिल किया जाना चाहिए।

iii. याचिकाकर्ताओं द्वारा यह बताया गया है कि पाटनरोधी शुल्क को पाटनरोधी शुल्क की नियत राशि (शुल्क की नियत राशि) के रूप में लगाया जा सकता है।

- i. यह अनुरोध किया जाता है कि शुल्क अमरीकी डालर के रूप में लगाया जाए। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पहले ही अनेक अन्य जाँचों में पाटनरोधी शुल्क को अमरीकी डालर के रूप में व्यक्त किया है। हम वर्तमान मामले में भी वहीं अनुरोध करते हैं। रुपये के मूल्य में भारी गिरावट आई है और उससे कच्ची सामग्रियों, सुविधाओं और अन्य लागतों में प्रभाव पड़ा है इसलिए निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को कृपया अम.डा. में व्यक्त किया जाए।

अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए अनुरोध

84. स्टैंडर्ड रेडिएटर्स प्रा. लि. ने यह बताते हुए अनुरोध किया है कि पीयूसी को पीयूसी के दायरे से संबंधित पैरा 19 में विस्तार से परिभाषित किया जाना चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

85. ऊपर उठाये गये मुद्दों के संबंध में प्राधिकारी का निर्णय निम्नानुसार है :

- i) यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे पर इस जाँच परिणाम के उचित पैराग्राफों में पर्याप्त रूप से विचार किया गया है और शुल्क तालिका में भी उसका उल्लेख किया गया है। इसके अलावा, प्राधिकारी का यह संगत मत रहा है कि सीमाशुल्क वर्गीकरण सांकेतिक हैं और पीयूसी का विवरण निर्णायक कारक होता है।
- ii) पीयूसी की स्पष्टता के संबंध में प्राधिकारी ने इस जाँच परिणाम के पैराग्राफ 19 में दायरे और अपवर्जनों को विस्तार से परिभाषित किया है।
- iii) दिनांक 1 मार्च, 2011 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 15/2011-सीमाशुल्क (एन.टी.) के अनुबंध-III में क्षतिरहित कीमत को निर्धारित करने के सिद्धांत दिए गए हैं। वर्तमान मामले में एनआईपी को उक्त नियम के अनुपालन में निर्धारित किया गया है। डीआई की दलील तदैव नियम के विपरीत है और अस्वीकार्य है।

- iv) प्राधिकारी ने वर्तमान जाँच के तथ्यों और परिस्थितियों के आधार पर यह निर्णय लिया है कि वर्तमान जाँच में अम.डा. के रूप में लगाया गया निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क पाटन और घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए सबसे उपयुक्त होगा।

ठ. निष्कर्ष

86. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि :

क. संबद्ध वस्तु का भारत को संबद्ध देश से निर्यात उसके संबद्ध सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है।

ख. घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ग. यह वास्तविक क्षति संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण हुई है।

भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

87. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से भारत में इस उत्पाद के कीमत स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से पाटन की प्रक्रियाओं द्वारा अर्जित अनुचित लाभ कम होगा, घरेलू उद्योग का पतन होने से रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की व्यापक उपलब्धता बनाए रखने में सहयोग मिलेगा। उपभोक्ता अभी भी इस उत्पाद की आपूर्ति के दो अथवा उससे अधिक स्रोत बनाए रख सकते हैं।

88. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्यतः पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में मुक्त एवं पक्षपात रहित प्रतिस्पर्धा कायम हो सके जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होगा और इसलिए उपभोक्ताओं इस संबद्ध वस्तु की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

सिफारिशें

89. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत की गई और उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को प्रदान की गई थी और पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना प्रदान करने के लिए निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं उनके कारणात्मक संबंध के बारे में जांच शुरू और संपन्न करने के बाद और सकारात्मक पाटन मार्जिन तथा ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि करने के उपरांत प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन एवं क्षति को समाप्त करने के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाना अपेक्षित है। अतः प्राधिकारी नीचे दिए गए ढंग और तरीके से संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं।

90. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, इनमें से जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार, संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर निम्नलिखित तालिका के कालम 9 में उल्लिखित राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका									
क्र. सं.	टैरिफ मद	वस्तुओं का वर्णन	विनिर्देशन	मूलता का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि(अम.डा.में)	यूओएम
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	8708 91 00*	एल्युमीनियम रेडिएटर्स **	कोई विनिर्देशन	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	कोई	कोई	22.89	संख्या
2	8708 91 00*	एल्युमीनियम रेडिएटर्स **	कोई विनिर्देशन	चीन जन. गण.	कोई	कोई	कोई	22.89	संख्या
3.	8708 91 00*	एल्युमीनियम रेडिएटर्स **	कोई विनिर्देशन	कोई	चीन जन. गण.	कोई	कोई	22.89	संख्या

*सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और शुल्क का निर्धारण पीयूसी के वर्णन के अनुसार किया जाएगा।

**उत्पाद का वर्णन इस जाँच परिणाम के पैरा 19 में यथा विनिर्दिष्ट रूप में है।

91. इस अधिसूचना के प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी शुल्क शामिल होंगे।

92. केन्द्र सरकार द्वारा इस अंतिम जांच परिणाम पर आधारित आदेश के विरुद्ध खिलाफ कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

डॉ. इंद्रजीत सिंह, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

[DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING & ALLIED DUTIES]

NOTIFICATION

New Delhi, the 20th March, 2017

(Final Findings)

Subject: Anti-dumping duty investigation concerning imports of Aluminum Radiators, Aluminium Radiator Sub- Assemblies and Aluminium Radiator Core, including in CKD or SKD conditions, for use in used/on road vehicles and generator sets, excluding aluminum radiators meant for use in new Automobiles from China PR

A. BACKGROUND

F. No. 14/24/2015-DGAD.—1. M/s Banco Products (India) Ltd. (hereinafter referred to as ‘petitioner’ or “the applicant”) has filed an application (also referred to as petition) before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped articles and for Determination of injury) Rules, 1995 as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD Rules) for initiation of Anti-Dumping Duty investigation concerning imports of “Aluminum Radiators, Aluminium Radiator Sub- Assemblies and Aluminium Radiator Core, including in CKD

or SKD conditions, for use in used/on road vehicles and generator sets, excluding aluminum radiators meant for use in new Automobiles from China PR” (hereinafter also referred to as subject goods) from China PR (hereinafter also referred to as subject country).

2. Whereas, the Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant, issued a Notification No. 14/24/2015-DGAD dated 1st January, 2016, published in the Gazette of India, initiating the subject investigations in accordance with the Rule 5 of the above Rule to determine existence, degree and effect of the alleged dumping of the subject goods, originating in or exported from China, and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the alleged injury to the domestic industry.
3. Whereas, the Authority issued a corrigendum dated 22nd January 2016 and determined the period of investigation as 1st April 2014 to 30th June 2015 (15 Months) to enable itself to make required analysis on the basis of more updated data.
4. Whereas, the Authority issued a clarification dated 16th March 2016 with regard to scope of the product under consideration.

B. PROCEDURE

5. The procedure described herein below has been followed by the Authority with regard to the subject investigation:
 - (i) The Designated Authority, under the above Rules, received a written application from the Applicant on behalf of the domestic industries, alleging dumping of "Aluminum Radiators, Aluminium Radiator Sub- Assemblies and Aluminium Radiator Core, including in CKD or SKD conditions, for use in used/on road vehicles and generator sets, excluding aluminum radiators meant for use in new Automobiles from China PR".
 - (iii) The Authority notified the Embassy of China in India about the receipt of the anti-dumping application before proceeding to initiate the investigations in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra. The Authority issued a public notice dated 1st January, 2016 published in the Gazette of India Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods.
 - iv. The Authority sent a copy of the initiation notification to the Embassy of China PR in India, known producers/exporters from China PR and the domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
 - v. The Authority sent exporter's questionnaires to elicit relevant information to the following known producers/exporters in China PR, (whose details were made available by the applicant) and gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2) of the AD Rules.
 1. Xinxiang Hauzheng Radiator Co. Ltd
 2. Botou City Sanqi Auto parts Co. Ltd
 3. Guangzhou Guangyang Auto radiator Co Ltd
 4. Guangzhou Auto Parts
 5. Jiangxi Xintian Auto Industry Co Ltd
 6. KVR International Co. Ltd
 7. Ningbo Haishu Zhong Xing Original Trading Co. Ltd
 8. Ningbo Tirri Automobiles Parts Co Ltd
 9. Ruian Xinminbang Imp & Exp Trade Co Ltd
 10. Wenzhou Guangsheng Auto parts Co Ltd
 11. Wenzhou Tall Automobiles Parts Co Ltd
 12. Jiangsu Valsens Thermalsys
 13. Zhejiang Yameili Automobile Parts Co Ltd
 14. Zhejiang Huasen Radiator Manufacturing Co Ltd
 - vi. However, none of the exporters filed response to the exporter's questionnaire or made any other submissions.
 - vii. The Authority forwarded a copy of the Initiation Notification to the following known importers/users/user associations (whose names and addresses were made available to the authority) of subject goods in India and advised them to make their views known in writing within the time limit prescribed by the Authority in accordance with the Rule 6(4):

1. Unique Motors (India)
 2. Apex Cooling System Pvt. Ltd
 3. Kota Radiators Sales and Service
 4. Rajasthan radiator House
 5. Karnavati Car Pvt. Ltd
 6. Ahuja Sons.
 7. Classic Spares
 8. Gurupraksh Auto Pvt. Ltd.
 9. Apollo Industries
- viii. Initiation notification was sent to the following other domestic producers:
1. Tata Toyo Radiator Ltd
 2. Tekson Radiators Pvt Ltd
 3. Varun Radiators
 4. AlkraftThermotechnologies Pvt Ltd
 5. Lloyd Electric & Engineering Ltd.
 6. Modine Thermal Systems
 7. S M Auto Engg. Pvt. Ltd
 8. Standard Radiators Pvt. Ltd
 9. G.S.Radiators Ltd.
- ix. None of the other domestic producer has filed response in the form and manner prescribed. However, following companies made submission, supporting imposition of anti-dumping duties.
1. G. S. Radiators
 2. Lloyd Electric & Engineering Ltd
 3. Tata Toyo Radiator Limited
 4. Varun Radiators
- x. Following importers/users have also filed their submissions/representations in the above matter.
1. Pacific Exports
 2. Classic Spares
- xi. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6 (7).
- xii. The Authority has examined the information furnished by the domestic producer to the extent possible on the basis of guidelines laid down in Annexure III to work out the cost of production and the non-injurious price of the subject goods in India so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- xiii. The period of investigation (POI) proposed by the applicant was from 1st April 2014 to 31st March 2015. However, for enabling the Authority to make required analysis on the basis of more updated data, the Authority determined the revised POI as 1st April 2014 to 30th June 2015 (15Months) vide corrigendum issued dated 22nd January 2016. The injury investigation period covered is April 2011-March 2012, April 2012 - March 2013, April 2013 -March 2014 and POI.
- xiv. Further information was sought from the applicant and other interested parties to the extent deemed necessary. Verification of the data provided by the domestic industry was conducted to the extent considered necessary for the purpose of the investigation.
- xv. Non-injurious price has been determined based on the cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally

Accepted Accounting Principles (GAAP) so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.

- xvi. During the course of investigation, the transaction wise data was called from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and the same has been adopted for determination of volume and value of imports of the product concerned in India and analysis of various parameters. However, for the import data for Radiators for Gensets, the reliance has been placed on IBIS data since DGCI&S data did not show any imports.
- xvii. The Authority held an oral hearing on 24th August, 2016 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance to Rule 6 (6), which was attended by the representatives of domestic industry, M/s Standard Radiators another manufacturer in India and M/s Classic Spares, a user of the product in India. A second hearing was held by the Authority on 7th November, 2016. This second Oral Hearing was necessitated due to the change in the Designated Authority from the time of first Oral Hearing. This development mandates that a new public hearing be held by the new Designated Authority as per the judgement of the Hon'ble Supreme Court in the matter of Automotive Tyre Manufacturers' Association (ATMA) vs Designated Authority, delivered in Civil Appeal No. 949 of 2006 on 07-01-2011. The interested parties who presented their views orally at the time of oral hearing were advised to file written submissions of the views expressed. An opportunity to file rejoinder submissions by interested parties was also given. The submissions made therein have been duly considered and addressed appropriately. Further, for verification of various financial data of the petitioner Company, another hearing was held on 20th December, 2016.
- xviii. Exporters, producers and other interested parties who have neither responded to the Authority, nor supplied information relevant to this investigation have been treated as non-cooperating interested parties.
- xix. ***in this Final Finding represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.
- xx. The exchange rate adopted by the Authority for the subject investigation is 1 US\$ = 62.13 Rs.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

- 6. The product under consideration in the present investigation is "Aluminum Radiators, Aluminium Radiator Sub- Assemblies and Aluminium Radiator Core, including in CKD or SKD conditions, for use in used/on road vehicles and generator sets, excluding aluminum radiators meant for use in new Automobiles, originating in or exported from China PR".

Submissions by the Domestic Industries

- 7. The submissions made by domestic industry are as follows:
 - a. The scope of product under consideration should include finished ready to use radiators, radiators in CKD or SKD conditions, and aluminium radiator core. If the duty is imposed only on finished goods, the goods can be imported in unassembled form and will frustrate the entire purpose of Imposing duty.
 - b. The product under consideration comprises of assembly of number of parts/components, some of which are produced in-house while some are purchased. The production process involves production of critical parts such as Aluminum Radiator core and thereafter assembly of the same. The assembly operation is merely a screw driver technology.
 - c. The anti-dumping duties are required to be imposed on product under consideration whether in the form of assembled or CKD & SKD conditions.
 - d. If ADD is imposed on product under consideration in assembled or CKD & SKD conditions, it would also address the future problem of circumvention of duty. In past Authority has determined the product similarly in CFL and SDH.
 - e. There has not been any case before where the product under consideration included only those goods which were imported during the POI. The Authority has never examined an exhausted list of product under consideration.
 - f. Sub-assemblies should be included in the product under consideration. If duty is imposed on radiator core only, the exporter will start exporting sub-assemblies and will make the entire process futile.
 - g. HS code for automotive radiators and Gen Set radiators are same. Even if it was different it could have been included in the product under consideration. Authority has done so in past cases such as VFY.

- h. Petitioner is suffering adverse price effect. So long as the petitioner suffers adverse price or volume effect, the authority will conclude that the DI has suffered injury.
- i. DGAD has restricted the scope of product under consideration on the basis of application and the same view can be taken in the present case.
- j. US ITC has in the matter of Automotive Replacement Glass Windshields From China Investigation No. 731-TA-922 (Final) Publication 3494, March 2002, held as follows

We find one domestic like product comprised of ARG windshields. ARG and OEM windshields have the same basic physical characteristics and end uses; the differences between them, principally their conformity with vehicle manufacturers' proprietary specifications, are subtle. Nevertheless, those distinctions do have significant implications for other factors pertinent to the domestic like product analysis. Interchangeability is limited. ARG windshields, which are not designed to those proprietary specifications, may not be used in lieu of OEM windshields in automobile manufacturing. Although OEM windshields may be used in lieu of ARG windshields, this use appears to be limited primarily to warranty replacement where OEM windshields are required. There are significant differences in channels of distribution, in that OEM windshields are sold primarily to vehicle manufacturers, and ARG windshields are sold primarily to distributors and retail auto glass outlets. While certain basic manufacturing steps are the same for ARG and OEM windshields, and there is significant overlap in some common manufacturing facilities and employees producing both types of windshields in the United States, there are significant differences between the two in the time and expense devoted to product development. Moreover, while OEM windshields tend to be produced in high volume production runs with limited flexibility to change patterns, ARG windshields are generally produced in flexible production facilities that use low to moderate volume production runs, and make frequent pattern changes. On the basis of this record, we find one domestic like product coextensive with the scope consisting of ARG windshields.

- k. In the present case Product under consideration is an assembly of a number of components, such as aluminium radiator core, plastic top, bottom tanks, rubber gaskets, drain cock, pressure cap, fasteners, etc. The production process involves production of aluminium components, viz. Fins, Tubes, Header Plate and Core channel. A majority of these components items are produced in house by the DI. Once produced, the parts are assembled and then passed through a brazing furnace. The output from a brazing furnace is a brazed aluminium radiator core.
- l. The product under consideration is used as a cooling device in automobiles and industrial generator sets. The hot coolant carrying heat from the engine passes through the radiator cores and in the process conducts heat to the aluminium tubes. The aluminium tubes in turn conduct the heat to the aluminium fins. From the aluminium fins, heat is radiated out to the air which passes through the radiator core. Hot coolant passes through from the top tank of the radiator and cold coolant flows out from bottom tank of the radiator. The product under consideration is essentially a heat exchanger and is used in automobile and industrial generator sets. In automobiles, the product under consideration covers only radiators used in cars, truck & bus and tractors. Even though radiators are used in other kinds of vehicles as well, the same is beyond the scope of product under consideration. Further, every vehicle requires a specified dimensions of radiator and therefore different radiator cannot be interchangeably used in a vehicle.
- m. Radiators typically have a long life and therefore production of radiators for use in new automobiles is much different from production of radiators for use in aftermarket. As against about 12 lac radiators produced by the petitioner over the injury period for use in new vehicles, the petitioner produced about 7 lac radiators for use in vehicles in replacement market. In OEM sector, the product of a particular model is used in large volumes and therefore production lines for radiators meant for new vehicles are quite automated. By contrast, in aftermarket, since the product is used in automobiles which were put on road several years before, the dimensions of the radiator used in replacement market are much different from dimensions of the radiators used in OEM. Further, every automobile producer tends to modify the dimensions of radiators with every change in the automobile model. Thus, radiator manufacturers work hand in hand with automobile manufactures for development of radiators required for new models of vehicles launched by automobile manufacturers. Further, once automobile manufacturers put a new model in the production line, such automobile manufacturers tend to buy large volumes of such radiators. By contrast, in replacement market, since radiators have long life, the requirement of radiator arises in vehicles which were put on road few decades before. Therefore, demand for such radiators in aftermarket is significantly lower than demand for radiators in OEM. Further, in replacement market, the buyers may not change complete radiator and may use one or more components of the existing radiator and buy only remaining from the market. For example, it is quite common for the consumers to buy only aluminium radiator core and use all other components and parts from the existing radiators. Accordingly, not only dimensions of product, but also consumer expectations and the volume of production significantly differ in OEM and replacement market. Thus, the requirement of the product in OEM and replacement market are totally different with regard to associated product type, its

dimension, its stage of integration and the volume of product required. Accordingly, manufacturers tend to set up different production lines to cater to different requirements for different market segment.

- n. The subject goods are classified under Chapter 87 of the Customs Tariff Act, 1975, under customs sub-heading 87089100. The customs classification, however, is indicative only, and the same is not binding on the scope of the PUC under investigation.
- o. The subject goods produced by the domestic industry are identical to the product under consideration being imported into India. The domestic industry claims that there is no known difference in applicant's product and product under consideration exported from the subject country and the two are comparable in terms of characteristics such as physical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. There is no significant difference in the subject goods produced by the applicant and those exported from the subject country and both are technically and commercially substitutable.
- p. The Designated Authority issued a clarification with regard to the product under consideration. Further, the Designated Authority has specified a PCN system for undertaking price comparisons. Petitioner has followed the same in providing relevant information to the Designated Authority.
- q. Domestic industry disputed the submissions made by Standard Radiators Pvt. Ltd stating that there is no ambiguity in the scope of product under consideration.

Submissions made by the other producers/exporters/other interested parties

8. The submissions made by other interested parties are as follows:
 - i. PUC includes Aluminium radiators along with sub-assemblies and generator sets. It is not appropriate to include sub-assemblies and components with the main product. The Description of the PUC suffers from serious legal flaws. Any information to be given by the interested parties becomes difficult as there is no clarity as to what data is to be shared.
 - ii. Standard Radiators Pvt. Ltd made submissions stating that the scope of product under consideration was vague and unclear. It has been contended that the authority should clarify the meaning of sub-assemblies that are sought to be included and specify precise scope of product under consideration. There is no clarity as to what is the definition of "Sub-Assemblies, SKD and CKD" with respect to the PUC.
 - iii. The investigation excludes aluminium radiators meant for use in new vehicles, The PUC cannot be defined on the basis of market segment.
 - iv. Mr Prashant Aggarwal appearing on behalf of Classic Spares, an importer/user of radiators have represented that the petitioners are not making the full range of radiators and therefore mechanical radiators required by some of the car manufacturers be kept out of the scope of investigation and consequent imposition of duty.
 - v. M/s Tekson Radiators Pvt. Ltd., a supporter of the petition has requested to include Oil Coolers in Product under consideration for this investigation.

Examination by the Authority

9. The product under consideration in the present investigation as per the initiation notification is as follows-
"The product under consideration in the present petition is "Aluminium Radiators, Aluminium Radiator Sub - Assemblies and Aluminum Radiator Core, including in CKD or SKD conditions, for use in used/on road vehicles and generator sets, excluding aluminum radiators meant for use in new automobiles". Aluminium Radiators are classified in Chapter 87 under customs subheading no. 87089100 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975. However, the said Customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation."
10. Authority after receiving post initiation submissions from the interested parties decided to further specify the scope of product under consideration. Accordingly, Designated Authority issued clarification dated 16th March, 2016, stating as follows-
"With reference to Initiation Notification No. 14/24/2015/ DGAD dated 1st January, 2016 concerning imports of "Aluminium Radiators, Aluminium Radiator Sub- Assemblies and Aluminium Radiator Core, including in CKD or SKD conditions, for use in used/on road vehicles and generator sets, excluding aluminium radiators meant for use in new automobiles originating in or exported from China", requests were received from the interested parties, seeking clarity on the scope of the Product Under Consideration. The matter has been examined and it has been decided by the Designated Authority to clarify the matter further in continuation of the said initiation notification, as below:

A. The following items imported for use in Used/On Road Automobiles and Gen Sets **are covered** within the scope of PUC for the purposes of this investigation:

(a) Aluminium Radiator Cores;

(b) Aluminium Radiators; Complete and/or in completely knocked or semi-knocked down condition;

(c) Aluminium Radiator attached with other parts such as, oil cooler, air cooler, condenser, compressor, fan motors etc.

B. Aluminium Radiators, Radiator core, Aluminium Radiator attached with an assembly or a sub-assembly in any combination, mentioned above, when imported by the Original Equipment Manufacturer (such as Automobile Manufacturer and Gen Set Manufacturer) are **not covered** within the scope of PUC for the purposes of this investigation and proposed measures.”

11. The subject goods are used as engine cooling devices, mainly used by Automobile and Industrial generator set. The subject goods are commonly sold in pieces or numbers. The product is classified in chapter 87 of the Customs Tariff Act 1975, under customs sub-heading 87089100”. The classification is, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation
12. It was clarified that the scope of product under consideration does not include solo components e.g. rubber gasket, frames, cooler, tank, tubes etc. However, if the component is imported along with radiator core as a part of radiator, the same is subject to the proposed anti-dumping duty because it is covered within the definition of CKD/SKD. The Authority has decided that for the purpose of this investigation, imports of any component/s in isolation or as stand-alone imports is not covered within the scope of the product under consideration
13. The sub-assemblies are assembly of aluminium radiator core along with some or all parts and components. The complete Radiator or sub-assemblies when imported in completely knocked down or semi knocked down form, are also covered within the scope of the PUC under investigation.
14. Also the PUC does not include the radiators required for assembly of new equipment by the car manufacturers and genset manufacturers (OEMs).
15. The submission made by the DI regarding clear demarcation of market segment for the Radiators required by OEM and on road vehicles was examined in detail and also verified. During the physical verification of the plant of the domestic industry, it was clearly seen that the manufacturing lines deployed by petitioners for production of radiators meant for OEM are substantially different from production lines deployed by petitioners for production of radiators meant for replacement market. Further, the product itself is clearly distinguishable in the respect of its application i.e. new vehicle application or aftermarket application. Not only dimensions of product, but also consumer expectations and the volume of production significantly differs in OEM and replacement market. The replacement market goods cannot be used by OEM of the automobiles and gensets. The OEM Radiators are generally sold to vehicle manufacturers, whereas the replacement goods are sold to distributors and auto repair shops.
16. The investigating authorities in other countries have also described product under consideration, scope of which was restricted to use in particular market segments.
17. Since the product under consideration can be produced and sold at different stages of its integration, the product under consideration for the purpose of present investigation has been segregated into (a) radiator core & (b) radiator complete.
18. Further, considering that the product under consideration may be used in car, truck & bus, tractors and gensets applications, the authority has already clarified the PUC by various PCN system for the purpose of undertaking dumping margin, price undercutting and injury margin analysis.
19. The product under consideration is “Aluminium Radiators, Aluminium Radiator Sub- Assemblies and Aluminium Radiator Core, including in CKD or SKD conditions, for use in used/on road vehicles and generator sets, excluding aluminium radiators meant for use in new Automobiles” originating in or exported from China PR, excluding aluminium radiators meant for use in new automobile equipment manufacturing applications. Imports of any component/s like rubber gasket, frames, oil cooler, tank, tubes etc. in isolation or as stand-alone imports is not covered within the scope of the product under consideration. PUC covers subject goods for used cars, tractor trucks and gensets. Specifically excluded from the scope of this investigation are aluminium radiators for use in original assembly of vehicles. The radiators made for OEM and replacement market (or for on road vehicles) are different in technical specifications and pricing.

D. **LIKE ARTICLE**

20. With regard to like article, Rule 2(d) of the Anti-dumping Rules provides as under:-

"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;

21. After considering the information on record, the Authority holds that there is no material difference in product under consideration exported from subject country and the product produced by the Indian industry. Product under consideration produced by the domestic industry is comparable to the imported subject product in terms of physical characteristics, production technology & manufacturing process, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable.
22. The Authority holds that the product manufactured by the domestic industry and the subject goods imported into India from the subject country are like articles within the meaning of the Anti-dumping Rules;

E. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

Submissions by the Domestic Industries

23. The submissions made by the domestic industry are as follows:
 - i. The petition has been filed by M/s Banco Products (India) Ltd. (referred to as Petitioner/Applicant) for imposition of anti-dumping duty on imports of Aluminium radiators (subject goods) from China PR.
 - ii. The production of the petitioner alone constitutes a major proportion of Indian production of the subject goods. The petitioner has sufficient standing to file the present petition on behalf of the Indian domestic industry for the product concerned. Further, petitioner constitutes domestic industry within the meaning of the Rules.
 - iii. The total size of the market and production of Radiators for used/on road cars and gensets in the country have been determined based on the market intelligence carried out by the petitioner's Marketing field staff. There is a dedicated Aftermarket Sales & Marketing team, which is scattered in all the regions to cover whole of Indian Market. Since the Production and Sales data are company confidential and no such data are available in other sources petitioner considers it to be the best way to infer the Size of the market and share of each producer in India for After Market sales
 - iv. The petition has been subsequently supported by Tata Toyo Radiator Ltd. Varun/Cougar Radiators Pvt. Ltd., Teksons Radiators Pvt. Ltd and Lloyd Electric & Engineering Ltd. M/s G.S. Radiators have also stated support to the petition, however they have not produced radiators for replacement market during the period of investigation, accordingly, their production has not been taken into account. Petitioner along with supporters, who are manufactures of PUC in POI, is a major producer of the subject goods in India holding 92% share of the production of PUC in India.
 - v. Petitioner has not imported the subject goods. Petitioner is not related (either directly or indirectly) to any exporter or importer of product under consideration in the subject country. Thus the petitioner is eligible domestic industry under Rules 2(b) and 5(3) of the AD Rules.

Submissions made by the producers/exporters/other interested parties

24. The submissions made by other interested parties with regard to domestic industry and standing are as follow:
 - i. Defining the PUC as it has been, makes it impossible for the DA to carry out the mandatory tests of "standing" and "DI"
 - ii. Standing has not been established as the proposition of the DI to read the phrase "total production" qua a particular market segment is not envisaged in the provisions of law. There is no legal authority to exclude any particular market segment. Thus, question of taking production for used vehicles for determining standing is not justified.
 - iii. Further, production meant for captive consumption is also to be taken into consideration while assessing the Standing. (Cases referred: Transitional Safeguard Measure on Combed Cotton Yarn from Pakistan).

Examination by the Authority

25. Rule 2 (b) of the AD rules defines domestic industry as under:

"(b)"domestic industry "means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers"

26. The application in the present case has been filed by M/s Banco Products (India) Ltd., a domestic producer of the product under consideration and who has provided detailed information for investigation in the matter of imposition of anti-dumping duty on imports of subject goods from China PR. The authority determined at the stage of initiation that the petition satisfied requirement of standing under the Rules and the Petitioner constituted domestic industry within the meaning of the Rules.
27. Since the product under consideration has been described as "Aluminium Radiators, Aluminium Radiator Sub - Assemblies and Aluminium Radiator Core, including in CKD or SKD conditions, for use in used/on road vehicles and generator sets, excluding aluminium radiators meant for use in new automobiles", production of radiators only in use in replacement market has been considered for the purpose of determining standing. Production of radiators for use in new vehicle applications or for exports has not been considered as product under consideration for the purpose. Production of product under consideration only for replacement segment has been considered for the purpose of standing, scope of the domestic industry and injury analysis
28. Prior to initiation, the authority sent communications to various Indian producers to confirm their support or opposition to be able to take a decision on the standing of the Domestic Industry. The following domestic producers have stated their support to imposition of anti-dumping duties, though they have not provided costing and injury information.
- Tata Toyo Radiator Ltd.
 - Varun/Cougar Radiators Pvt. Ltd,
 - Teksons Radiators Pvt. Ltd and
 - Lloyd Electric & Engineering Ltd.
 - G.S Radiators
29. AlkraftThermoTechnologies Pvt Ltd., Modine Thermal Systems, S M Auto Engg. Pvt. Ltd and Standard Radiators Pvt. Ltd and Delphi Radiators are the other known producers of the subject goods in India. These companies have however, not expressed their opinion with regard to the present investigation and proposed measures.
30. Production of the petitioner, supporters and other Indian producers was re-determined based on information received from various interested parties, as below:

S.No.	Particulars	Production in Numbers	Share in production
1	Petitioner	****	70.89 %
2	Supporters	****	21.21 %
3	Petitioner + Supporter	****	92.10 %
4	Others(Estimated)	****	7.90 %
5	Total Production	****	100 %

31. On the basis of above figures, the authority holds that that the petitioner has satisfied the requirement of standing under Rule 5(3) and constitutes domestic industry within the meaning of Rule 2(b).

F. ASSESSMENT OF DUMPING – METHODOLOGY AND PARAMETERS

Market Economy Treatment, Normal Value, Export Price and Determination of Dumping Margin

Normal Value

Submissions by the Domestic Industries

32. The submissions made by domestic industry are as follows:

- China should be considered a non-market economy, in line with the position taken by the Authority in previous cases, and by investigating authorities in other countries. Chinese producers' cost and price cannot be relied upon for determination of normal value.
- Market economy status cannot be granted unless following conditions are fulfilled:

- a. Market economy status cannot be given in a situation where one of the major shareholders is a State owned/controlled entity
 - b. Market economy status cannot be given unless the responding Chinese exporters establish that the prices of major inputs substantially reflect market values
 - c. Market economy status cannot be given unless the responding exporter establish that their books are audited in line with international accounting standards
 - d. Market economy status cannot be granted even if one of the parameters is not satisfied.
 - e. The onus/obligations to establish market economy status is onto responding Chinese exporters and not onto the Designated Authority.
 - f. Market economy status cannot be granted unless the responding company and its group as a whole make the claim.
 - g. In a situation where the current shareholders have not set up their production facilities themselves but have acquired the same from some other party, market economy status cannot be granted unless process of transformation has been completely established through documentary evidence.
- iii. According to these Rules, the normal value can be determined on any of the following basis:
- *the price in a market economy third country,*
 - *constructed value in a market economy third country,*
 - *the price from such a third country to other country, including India.*
 - *the price actually paid in India, adjusted to include a reasonable profit margin.*
 - *the price actually payable in India, adjusted to include a reasonable profit margin.*
- iv. Since no questionnaire response has been filed by any of the Chinese companies, the subject country should be treated as non-market economy. India is most appropriate country for comparable prices for the PUC.

Views of the opposing interested parties

33. None of the exporters from China PR has filed any exporter questionnaire response and claimed MET status in the above matter.

Examination by the Authority

34. At the stage of initiation, the Authority proceeded with the presumption by treating China PR as a non-market economy country. Upon initiation, the Authority advised the producers/exporters in China to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of their market economy status. The Authority sent copies of the MET questionnaire to all the known producers/ exporters for rebutting presumption of nonmarket economy in accordance with criteria laid down in Para 8(3) of Annexure-I to the Rules. The Authority also requested Government of China to advise the producers/exporters in their country to provide the relevant information. However, none of the Chinese producers/exporters have filed any response.
35. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and establish to the contrary. The exporter/ producer of the subject goods are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-
- i. The decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
 - ii. The production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
 - iii. Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
 - iv. The exchange rate conversions are carried out at the market rate.

36. The Authority notes that none of the producers and exporters of the subject goods from the subject country have submitted the exporter's questionnaire response and market economy treatment questionnaire response, consequent upon the initiation notice issued by the Authority or rebutted the non-market economy presumption. In view of the above position, the Authority considers it appropriate to proceed with para-7 of Annexure I to the Rules for determination of normal value in case of China PR. As none of the producers/exporters from China PR has submitted MET questionnaire response, the Authority is unable to grant market economy status to Chinese producers for the purpose of this determination.
37. In view of the fact that none of the producers/exporters has filed any exporter's questionnaire including MET questionnaire, MET status has not been accorded to Chinese producers. Further, none of the interested parties, including the domestic industry, has made available any material fact to the Authority to select an appropriate market economy third country. The Authority has, therefore, determined the normal value in respect of China PR on other reasonable basis, in terms of second proviso of Para 7 of Annexure 1 to the Rules.
38. Para 7 of Annexure I of the Anti-dumping Rules provides as under:
- "In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis if the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments."*
39. In view of the above, the normal value for the subject products imported from China PR into India has been determined on the "any other basis" by considering best available information with regard to cost of production and after reasonable additions for selling, general & administrative expenses and reasonable profit margin. The normal value has been constructed considering consumption of major raw materials as per information provided by the domestic industry, international prices for major raw materials, conversion cost, interest, SGA, etc. at the levels allowed for the domestic industry. Further, 5% of cost of sales has been added towards reasonable profit.

Export price for China PR

40. Since none of the exporters from subject country has responded to the Authority, in the form and manner prescribed which could be used for determination of the export price and individual dumping margin, the Authority has determined the export price for producers/exporters on the basis of the DGCIS transaction wise data. Further, in view of significant difference in the costs and resultantly the price of different types of the product under consideration, the authority devised a PCN system and the same has been followed for determination and comparison of normal value, export price and dumping margin for each PCN.
41. The export price has been adjusted on account of Ocean freight, Marine insurance, Commission, Port expenses, Inland freight expenses, which may have been incurred by the exporter for exporting the material to India. Bank charges, Net Export Price after adjustment of the above-mentioned expenses is determined.

Determination of Dumping Margin

42. As per the DGCIS import data of the subject goods, 6 product types have been imported namely, Car Core, Car Complete, Truck and Bus Core, Truck and Bus Complete, Tractor Core and Tractor Complete. However, several import transactions of subject goods could not be identified PCN wise and have not been taken into account for dumping margin calculations. The import data for Genset Core and Genset Complete has been taken from IBIS, as the same were not identifiable from the DGCIS data.
43. In view of significant difference in the associated costs and prices of the product on the basis of PCN, the Authority has determined separate normal value for each of the product type and thereafter quantified dumping margin for the product under consideration on the basis of weighted average of the individual dumping margins.
44. Based on the methodology explained above, PCN wise constructed normal value, export price and dumping margin in respect of China has been worked out. Further, in view of significant difference in the associated costs and prices of the product, the Authority has analyzed separate dumping margin for each of the product type and thereafter quantified dumping margin for the product under consideration on the basis of weighted average of the individual dumping margins.

Net Export Price		Constructed Normal Value		Dumping Margin		
USD/No.	Rs/No.	USD/No.	Rs/No.	USD/No.	Rs/No.	Range %
7.03	436.716	***	***	***	***	300-350

45. It is seen that the dumping margin for the subject goods is more than de-minimus for the imports from the subject country.

G. METHODOLOGY FOR DETERMINATION OF INJURY

Submissions by the Domestic Industries

46. The submissions made by domestic industry are as follows:

- i. There is steady increase in demand throughout the injury period.
- ii. The petition was made on the basis of IBIS data, however, whatever DGCI&S data have been obtained it appears that the imports of product under consideration is even higher.
- iii. Imports in relation to production and consumption have also remained significant throughout the injury period.
- iv. The landed price of imports from subject country is below the net sales realization of the domestic industry in the period of investigation.
- v. The imports are significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market.
- vi. Landed price of imports have remained significantly below the selling price, cost of sales and NIP of the domestic industry.
- vii. The effect of such dumped imports is to depress prices to a significant degree and prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.
- viii. Production and sales of the domestic industry has increased over the injury period;
- ix. Petitioner has expanded capacity in the proposed POI. The capacity is for the plant as a whole.
- x. Capacity utilization of the plant has increased over the injury period.
- xi. Petitioner has made significant efforts to sell its product in the market, even at financial losses and therefore volume parameters shall not show the effect of dumping.
- xii. The market share of the domestic industry has increased over the injury period in view of the significant efforts made by the petitioner. Market share of the subject country has remained significant throughout the injury period.
- xiii. Landed price of imports has remained below the level of selling price and cost of sales of the domestic industry. The selling price of the domestic industry is below the level of cost of sales.
- xiv. Low priced imports from subject country forced the petitioner to reduce its prices consequently the petitioner was forced to suffer financial losses throughout the injury period. The losses have further intensified in the POI.
- xv. Profit before interest, cash profit and ROI also follow the same trend as that of profits.
- xvi. The decline in profitability of the domestic industry was due to reduction in the import prices without any justifiable reasons. The domestic industry is suffering significant financial losses as a result of significant dumping.
- xvii. Inventories with the Domestic Industry have shown increase throughout the injury period with a significant increase in POI. This situation exists despite rise in the level of demand.
- xviii. Consideration of the import prices from subject country, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market would show that the landed value of imported material from subject country is significantly below the level of selling price and cost of the sales of the domestic industry, causing severe price undercutting and price depression in the Indian market.

- xix. There is no viable substitute to this product. Demand for the product has shown increase and could not have been a factor responsible for price depression faced by the domestic industry in the proposed POI. It is thus evident that the only factor responsible for the domestic industry prices are the import prices of the product.
- xx. Employment and wages have shown improvement in injury period. Employment and wages are not solely dependent on the subject goods performance. These are governed by several legislative requirements in the Country. This increase in wages and employment is a result of setting up of fresh capacities and enhancement in production in POI. Employment and wages are not reflective of the adverse performance of the domestic industry, as these factors are governed by overall operations of the company and the economy.
- xxi. Productivity per day as well as per employee has increased over the injury period, in line with the movement of production.
- xxii. The dumping margin is not only more than de-minimus but also substantial. The impact of dumping on the Domestic Industry is adverse.
- xxiii. Most of the price parameters are negative in POI.

Views of other interested parties

47. No submissions have been made by any producer/exporter/other interested parties with regard to the injury and causal link.

Examination by the Authority

48. In consideration of the various submissions made by the domestic industry in this regard, the Authority proceeds to examine the current injury, if any, to the domestic industry before proceeding to examine the injury on account of imports from the subject country.
49. Article 3.1 of the WTO Agreement and Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.
50. Annexure II of the AD Rules requires that determination of injury shall involve objective examination of both:
- a. The volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and
 - b. Consequent impact of these imports on domestic producers of such products.
51. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and submissions made by various interested parties.

H. Impact of dumped imports on domestic Industry

52. The impact of the dumped imports on the domestic industry and production thereof, was analysed in terms of Annexure-II of the Anti-dumping Rules, which *inter alia* states as under:
- “(iv) *The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.*
- (vi) *The effect of the dumped imports shall be assessed in relation to the domestic production of the like article when available data permit the separate identification of that production on the basis of such criteria as the production process, producers’ sales and profits. If such separate identification of that production is not possible, the effects of the dumped imports shall be assessed by the examination of the production of the narrowest group or range of products, which includes the like product, for which the necessary information can be provided.*”
53. The Authority has examined the various injury parameters on the basis of facts and submissions made by the domestic industry.

a) Volume of Import

54. As per DGCI&S data, Imports volume from subject country have been identified and tabulated as under. As per the data 6 different product types have been imported, namely, Car Core, Car Complete, Truck and Bus Core, Truck and Bus Complete, Tractor Core, and Tractor Complete. Also there were several import transactions of subject goods which could not be identified under a specific PCN but have been taken into account for injury analysis. These unidentified import transactions could possibly include import of Gensets core and complete.

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (A)
China	Nos	199,880	184,584	341,050	4,81,635	3,85,308
Other Countries	Nos	7,226	1,285	1,491	4,636	3,709
Total imports	Nos	207,106	185,869	342,541	4,86,271	3,89,017

55. It is seen that imports have increased significantly in absolute terms over the injury period. Whereas demand for the product under consideration increased by about 39%, imports of the product under consideration from China increased by about 93% and imports from third countries declined by 49%.

b) Demand and Market Share

56. The demand/consumption of subject goods has been determined by adding domestic sales of domestic like products and imports of subject goods from subject country. It is noted that demand for the PUC has increased throughout the injury period as can be seen in the table below. Further, market share of subject country in demand has also increased over the injury period, whereas the market share of other countries and Indian Producers as a whole has declined.

Particulars	UOM	2011-12	2012-13	2013-14	POI(A)
Domestic industry	Nos	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	136	139	213
Other Indian Producers	Nos	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	83	67	50
Subject Country-China	Nos	199,880	184,584	341,050	385,308
Trend	Indexed	100	92	171	193
Other Countries	Nos	7,226	1,285	1,491	3,709
Trend	Indexed	100	18	21	51
Demand/Consumption	Nos	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	97	121	139
Market Share in Demand					
Domestic industry	%	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	140	115	154
Other Indian Producers	%	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	86	55	36
Indian Producers as a whole	%	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	105	76	77
Subject Country-China	%	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	95	141	139
Other Countries	%	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	18	17	37

c) Imports in relation to consumption and total imports-

57. Imports of the product under consideration from subject country have increased in relation to total imports, production and consumption in India as shown below:

<u>China imports in relation to</u>	%	2011-12	2012-13	2013-14	POI(A)
<u>Total Imports</u>	%	96.51	99.31	99.56	99.05
<u>Total demand/Consumption</u>	%	37.65	35.8	53.19	52.29

d) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

58. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II (ii) of the Rules lays down as follows:

"With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree."

59. It has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. The analysis for various price parameters has been based on DGCIS data for 6 identified products and IBIS data for Genset core and Genset complete.

e) Price Undercutting

60. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry. The prices of the domestic industry were determined at the ex-factory level and a comparison has been made between the landed value of the product and the average selling price of the domestic industry net of all rebates and taxes. This comparison showed that during the POI, the subject goods originating in China were imported into the Indian market at prices which were lower than the selling prices of the domestic industry. It is thus noted that imports of subject goods were undercutting the domestic prices and margin of undercutting is shown in the table below. In view of significant difference in the cost and price of PUC produced and sold in different market segment, the analysis of price undercutting was done PCN wise and thereafter price undercutting was quantified for the PUC on the basis of weighted average of the individual dumping margins.

Landed Value Rs/No	Net Sales Realization Rs/No	Price Undercutting Rs/No	Price Undercutting %
504	****	****	65-75

61. It is seen that the landed price of imports from subject country is lower than the selling price of the domestic industry, thus resulting in significant price undercutting.

f) Price suppression/depression

62. In order to determine whether the effect of imports is to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred, the Authority examined the changes in the costs and prices over the injury period. The position is shown as per the Table below:

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Cost of sales	Rs/Unit	****	****	****	****
Trend	Index	100	100	97	89
Selling price	Rs/Unit	****	****	****	****
Trend	Index	100	100	96	89

63. To examine the price suppression and depression effects of the dumped imports on the domestic prices, the trend of net sales realization of the domestic industry has been compared with the cost of sales. It is seen that both costs and price decreased over the injury period. It is also noted that the landed price of imports have been materially lower than the cost of production of the domestic industry.

g) Price Underselling

64. Authority notes that the price underselling is an important indicator of assessment of injury. Non injurious price has been worked out and compared with the landed value of the subject goods to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been determined considering the cost of production of the domestic industry for the PUC during the POI, in accordance with Annexure III of the Anti-dumping Rules. In view of significant difference in the cost and price of PUC produced and sold in market, the analysis of Landed Value and NIP was done PCN wise and thereafter price underselling was quantified for the PUC on the basis of weighted average of the individual dumping margins.

Landed Value Rs/No	Non Injurious Price Rs/No	Injury Margin Rs/No	Injury Margin %
504	***	***	300-350

I. IMPACT ON ECONOMIC PARAMETERS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

65. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below.

i. Capacity, Production, Sales, Capacity Utilization and Inventories

66. The data relating to the domestic industry is shown in the following table:

Particulars	UOM	2011-12	2012-13	2013-14	POI(A)
Capacity	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	100	100	113
Production-PUC	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	133	142	223
Production-NPUC	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	85	102	111
Production-Total	Nos	***	***	***	***

Particulars	UOM	2011-12	2012-13	2013-14	POI(A)
Trend	Indexed	100	99	113	143
Capacity Utilization	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	99	113	126
Sales Volume	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	136	139	213
Average Stock	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	87	112	352

67. It is noted that

- a. The capacity of the domestic industry has increased in period of investigation.
 - b. Production of the domestic industry has increased throughout the injury period.
 - c. Capacity utilization of domestic industry has been determined by including production of other kind of radiators, as the production facilities for the product under consideration are not dedicated for product under consideration alone. Capacity utilisation determined after adding production of other kinds of radiators also shows increase over the injury period.
 - d. Sales of domestic industry has also followed the same trend as production and capacity utilisation. Sales of the domestic industry have increased over the injury period.
 - e. Inventories with the domestic industry have increased significantly over the injury period.
- ii. **Profits, return on investments and cash flow**

68. The data relating to the domestic industry is shown in the following table:

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI(A)
Profit before tax	Rs. Lacs	(***)	(***)	(***)	(***)
Trend	Indexed	(100)	(136)	(140)	(188)
Profit before interest	Rs. Lacs	(***)	(***)	(***)	(***)
Trend	Indexed	(100)	(132)	(121)	(195)
Cash Profit	Rs. Lacs	(***)	(***)	(***)	(***)
Trend	Indexed	(100)	(126)	(103)	(154)
Return on capital employed	%	(***)	(***)	(***)	(***)
Trend	Indexed	(100)	(84)	(68)	(85)

69. It is noted that

- a. Low priced imports from subject country forced the petitioner to sell the product at a price below the remunerative prices resulting in financial losses suffered by the domestic industry throughout the injury period. The losses have intensified in the POI.
- b. Profit before interest was significantly negative and deteriorated over the injury period. The domestic industry was unable to recover its interest costs.
- c. The domestic industry also suffered cash losses and negative return on investment.

70. It is thus noted that the domestic industry is suffering significant financial losses as a result of significant dumping, which has led to significant cash losses and negative return on investment.

iii. **Employment, wages and productivity**

71. The position of the domestic industry with regard to employment, wages and productivity was below:

Particulars	UOM	2011-12	2012-13	2013-14	POI(A)
Salaries and wages	Rs Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	132	128	189
Employees	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	123	110	184
Productivity per Employee	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	108	129	122
Productivity per Day	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	99	113	143

72. It is seen that the employment, wages and productivity have increased in the injury period.

iv. **Growth**

73. The growth of the domestic industry with regard to various parameters was as follows. It is seen that growth of the domestic industry was positive with regard to volume parameters and negative with regard to price parameters.

Growth	UOM	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Production	%	-	33	7	57
Sales	%	-	36	3	53
Capacity utilization	%	-	(1)	(8)	(7)
Profit before tax	%	-	0	0	12
Profit before interest	%	-	(32)	8	(61)
Cash Profit	%	-	(26)	18	(50)
Return on Capital Employed	%	-	4	4	(5)

v. **Factors Affecting Domestic Prices**

74. Examination of the import prices from China, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market, etc. show that the landed value of imported material from China is below the selling price and the non-injurious price of the domestic industry, causing significant price undercutting as well as price underselling in the Indian market. It is also noted that the demand for the subject goods was showing significant increase during the injury period including the POI and therefore it could not have been a factor affecting domestic prices. Thus, the principal factor affecting the domestic prices is the dumped imports of subject goods from subject country.

vi. **Magnitude and Margin of Dumping**

75. The imports from China are far above the de minimis level of dumping margin. The dumping margin is quite significantly high. With such high magnitude of dumping margin, dumped imports are causing material injury to the domestic industry.

vii. **Conclusion on injury**

76. Having regard to the information on record and after examination of the performance of the domestic industry, the Authority concludes that the dumped imports of the subject goods from China have increased in absolute terms as well as in relation to production and consumption of the subject goods in India. Imports of the product are very significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. The imports are resulting in price underselling in the market, and are preventing the domestic industry from raising its price to a level where the domestic industry can earn reasonable profits on the investment. The demand for the product increased significantly

and consequently production, capacity utilisation and sales of the domestic industry also increased. However, performance of the domestic industry deteriorated in respect of inventories, profits, cash flows and return on investments. Growth of the domestic industry in respect of price parameters such as profits, cash profits, returns on capital was negative.

77. The Authority holds that the domestic industry has suffered injury in terms of adverse price effect of dumped imports, as a result of which the domestic industry incurred losses, negative cash profit and negative return on capital employed through entire injury period.

viii. **Non attribution Analysis**

78. The Authority has examined whether factors listed under the Anti-dumping Rules could have contributed to injury to the domestic industry. The examination of causal link between dumping and material injury to the domestic industry has been done as follows.

- a. *Changes in the patterns of consumption:* The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Changes in the pattern of consumption could not have, therefore, contributed to the injury to the domestic industry.
- b. *Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers:* There is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the domestic industry.
- c. *Developments in technology:* Technology for production of the product has not undergone any change. Developments in technology are, therefore, not a factor of injury.
- d. *Export performance:* Petitioner has exported the product under consideration during the injury period. However, the claimed injury to the domestic industry is on account of domestic operations for other than used/on road vehicles and generator sets. Petitioner has provided costing and injury information for the product under consideration separately. Hence, injury to product under consideration cannot be attributed to exports.
- e. *Performance of other products being produced and sold by the domestic industry:* Claimed injury to the domestic industry is on account of product under consideration.

79. Authority concludes that listed known other factors have not caused injury to the domestic industry.

J. CAUSAL LINK

Factors establishing causal link: -

80. The Authority notes the following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports:

- a. There is significant difference between the prices offered by the domestic industry and foreign producers. Resultantly, domestic industry was prevented from raising its prices to a level where it can earn reasonable profits.
- b. Imported product was undercutting the prices of the domestic industry. Resultantly, the domestic industry has been prevented from increasing the prices to the extent of increase in cost of production.
- c. Losses, negative cash profits and negative return on capital employed across injury period are directly a result of dumped imports;
- d. Significant increase in imports has led to significant stock piling with the domestic industry;
- e. Market share of the subject imports remained significantly high. Resultantly, market share of the domestic producers has declined.
- f. Growth of the domestic industry was negative in respect of a number of parameters as a result of dumped imports.

K. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

81. The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry on the basis of principles laid down in the Rules, as amended. The non-injurious price so determined has been compared with the landed prices of imports from the subject country. The injury margin so determined is significant.

Landed Value		Non Injurious Price		Injury Margin		
Rs/No	USD/No	Rs/No	USD/No	Rs/No	USD/No	Range %
504	8.11	***	***	***	***	300-350

L. POST DISCLOSURE COMMENTS

82. The issues raised at post disclosure stage have already been raised earlier during the investigation and also addressed appropriately. However, for the sake of clarity the submissions by the interested parties have been summarised and again addressed as below:

Submissions by the Domestic Industries

83. Submissions made by the domestic industry are as follows:

- i. The petitioner has requested the Authority to add a detailed explanation to the PUC as a note in the duty table for clarity and proper implementation of the duty notification.
- ii. The petitioner has raised issues pertaining to calculations of non-injurious price. They have asked for the determination of NIP keeping following considerations in mind:
 - a) There is a conflict between rule 3 and rule 4 of Annexure III with regard to selection of period for considering the information and data relating to cost of production. Therefore, it is critically important that the harmonious interpretation of rules made under Annexure III should be made to arrive at amount of antidumping duty that would remove the injury to domestic industry.
 - b) As per Rule 3, information or data relating to cost of production for POI should be considered and as per Rule 4 best utilization of raw materials/ utilities/production capacities over the past three years and POI may be considered to nullify the injury.
 - c) There is apparent conflict regarding the selection of period for the purpose of assessment of injury. However, the purpose of rule 4 is different. Rule 4 comes into operation only if there is any inefficient utilization of raw materials/ utilities/production capacities. If there is no inefficient utilization of raw materials/ utilities/production capacities by the domestic industry then rule 4 will not come into operation at all. So authority can consider the period other than POI only when there is inefficient utilization of resources.
 - d) Merely because raw materials/ utilities utilization was mathematically higher in POI, one cannot automatically presume 'inefficient utilization' of raw materials/ utilities/production capacities by the domestic industry. In fact, there is no inefficient utilization of raw materials or utilities and any such difference is a bonafide difference.
 - e) Since Annexure-III provides for segregating injury due to inefficient utilization, the Designated Authority shall not reduce the NIP by presuming inefficient utilization of raw materials and utilities.
 - f) Petitioners submitted that there is no inefficient utilization of either raw materials or utilities or production facilities. Any difference in these parameters is bonafide and not inefficient utilization. Lower capacity utilization during the POI is not due to inefficient utilization of production capacities.
 - g) The rules provide that the Designated Authority shall consider non injurious price at ex-factory level. Sales tax, excise duty, discounts, commission are payable at ex-factory level and therefore the fact that injury margin is being determined at ex-factory level does not imply that the sales tax and excise duty cannot be added.
 - h) Petitioners submitted that there is no reason why NIP should be at 'ex-factory level' only. Any such mandatory prescription under Annexure-III shall render it contrary to Annexure-II. Without prejudice, even if NIP should be at ex-factory level, the principles of fair comparison are required to be considered and addressed while comparing NIP with import price.
 - i) Under Rule (vii)(b) all freight-outward expenses are also disallowed. But some freight outward expenses are also incurred when goods are transferred to a warehouse from the factory and they are sold from the warehouse. In such a case, transportation cost from the factory to warehouse must be included while calculating the NIP.
- iii. It was submitted by the Petitioners that the antidumping duty may be imposed as fixed quantum of anti dumping duty (fixed form of duty).

- iv. It is requested that the duty should be imposed in terms of US\$. The Designated Authority has already expressed anti dumping duty in terms of US\$ in a large number of other investigations. We request the same in the present case as well. Rupee has depreciated significantly and impacted the costs of the raw materials, utilities and other costs, therefore, the definitive duties may kindly be expressed in US\$.

Submissions made by the other interested parties

84. Standard Radiators Pvt. Ltd has made submissions stating that the PUC should be defined in detail in para 19 pertaining to scope of the PUC.

Examination by the Authority

85. The decision of the Authority regarding the issues raised above is as below:

- i.) It is noted that the scope of the product under consideration has already been dealt with sufficiently in appropriate paragraphs of this finding and a reference thereof is also being mentioned in the duty table. Further, it is the consistent stand of the Authority that the customs classification is indicative and description of the PUC is the deciding factor.
- ii.) Regarding the issue of clarity in PUC, the Authority has defined the scope and the exclusions in great detail in paragraph 19 of this finding.
- iii.) Annexure III of Custom Notification No. 15/2011-customs (N.T) dated 1st March 2011 laid down the principles for determination of Non-injurious Price. The NIP for the instant case has been determined following the said Rule. The contention of the DI is contrary to the *ibid* Rule and not acceptable.
- iv.) The authority has decided, based on the facts and circumstances of the present investigation, that the definitive anti-dumping duty imposed in USD will be most suitable to offset the dumping and injury caused to the domestic industry in the present investigation.

M. CONCLUSION

86. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:
- a. The subject goods have been exported to India from the subject country below its associated normal value;
- b. The domestic industry has suffered material injury;
- c. The material injury has been caused by the dumped imports of the subject goods from subject country.

Indian Industry's Interest And Other Issues

87. The Authority recognizes that imposition of antidumping duties might affect the price level of product in India. However, fair competition in Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantage gained by dumping practices, would arrest the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. Consumers could still maintain two or more sources of supply.
88. The Authority notes that the purpose of antidumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

N. RECOMMENDATIONS

89. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of antidumping duty is required to offset dumping and injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder.
90. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the antidumping duty equal to the amount indicated in Col No.9 of the table below is recommended to be imposed on all imports of the subject goods originating in or exported from the subject country.

Duty Table									
Sl. No	Tariff Item	Description of Goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount (in USD)	UOM
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	8708 91 00*	Aluminium Radiators**	Any specification	China PR	China PR	Any	Any	22.89	number
2	8708 91 00*	Aluminium Radiators**	Any specification	China PR	Any	Any	Any	22.89	number
3	8708 91 00*	Aluminium Radiators**	Any specification	Any	China PR	Any	Any	22.89	number

*Custom classification is only indicative and the determination of the duty shall be made as per the description of PUC.

** The description of the product is as specified in para 19 of this finding.

91. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.
92. An appeal against the order of the Central Government arising out of this final finding shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

Dr.INDER JIT SINGH, Addl. Secy. & Designated Authority